कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN:2583-4991

● भोपाल मंगलवार 21 से 27 जुलाई 2026 ● वर्ष-27 ● अंक-09 ● पृष्ठ-16 ● मूल्य-13 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र.एम.पी./भोपाल/625/2024-26

प्रदेश के 30 से अधिक जिलों में सामान्य से कम बारिश

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल। वर्षाकाल के पचास दिन बीत जाने के बाद प्रदेश के 30 से अधिक जिलों में सामान्य से कम बारिश हुई है। मौसम विभाग के अनुसार फिलहाल अच्छी बारिश के कोई आसार नहीं हैं। इस सप्ताह एक पश्चिमी विक्षोभ जरूर सक्रिय हो रहा है लेकिन इसका असर कितनी बारिश करायेगा, मौसम विभाग बताने की स्थिति में नहीं है।

1 जून से 19 जुलाई तक मध्यप्रदेश में 261.7 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई है जो इस दौरन होने वाली सामान्य बारिश 312 मिलीमीटर से 16 प्रतिशत कम है। इस साल की मानसूनी बारिश के मामले में पश्चिमी मध्यप्रदेश थोड़ा भाग्यशाली रहा है जहां पर सामान्य से 10 प्रतिशत कम वर्षा हुई है। 1 जून से 19 जुलाई तक यहां पर सामान्य बारिश 280.5 मिलीमीटर होनी चाहिये जबकि वास्तविक वर्षा 253.1 मिलीमीटर हुई है। प्रदेश का पूर्वी क्षेत्र जिसमें विन्ध्य क्षेत्र, महाकौशल आता है बारिश के मामले में फिसड्डी रहा है। पूर्वी क्षेत्र में अभी तक सामान्य से 23 प्रतिशत कम बारिश हुई है। 1 जून से 19 जुलाई तक पूर्वी क्षेत्र में वास्तविक वर्षा 272.3 मिलीमीटर अंकित की गई है जबकि सामान्य वर्षा 352.4 मिलीमीटर होनी चाहिये। पूर्वी क्षेत्र के अधिकांश जिलों में -20 से -76 प्रतिशत तक कम बारिश हुई है। रीवा, सीधी, सिंगरौली, कटनी, जबलपुर, मैहर, शहडोल, सतना, अनूपपुर, मऊगंज ऐसे जिले हैं जहां पर -30 से -60 प्रतिशत कम बारिश हुई है। प्रदेश के 26 जिले ऐसे हैं जहां पर सामान्य से 50 प्रतिशत कम बारिश हुई है। आलीराजपुर में सामान्य से सबसे कम -76 प्रतिशत पानी गिरा है। रीवा में -62 प्रतिशत एवं सिंगरौली में -46 प्रतिशत कम बारिश हुई है। सामान्य वर्षा वाले जिलों की संख्या मात्र 14 है जो पश्चिमी क्षेत्र के हैं। सबसे अधिक देवास में 60 प्रतिशत एवं इंदौर में 29 प्रतिशत सामान्य से अधिक वर्षा हुई है।

जिलेवार वर्षा की जानकारी पेज 14 पर...

पूर्वी क्षेत्र सर्वाधिक सूखा, किसानों की चिंता बढ़ी

-20 से -50 प्रतिशत कम वर्षा वाले जिले

- दतिया, धार, झाबुआ, मुरैना, नर्मदापुरम, रायसेन, शिवपुरी, विदिशा, अनूपपुर, बालाघाट, डिंडोरी, जबलपुर, कटनी, मंडला, नरसिंहपुर, सागर, सतना, सिवनी, शहडोल, मऊगंज, सिंगरौली, टीकमगढ़, मैहर।

-50 से -76 प्रतिशत तक कम वर्षा वाले जिले

- आलीराजपुर (-76), रीवा (-62), सिंगरौली (-46)।

सामान्य से अधिक वर्षा वाले जिले

- आगर मालवा, भिंड, बुरहानपुर, देवास, इंदौर, हरदा, खंडवा, खरगौन, मंदसौर, नीमच, राजगढ़, सीहोर, उज्जैन, पांढुर्णा, भोपाल।

सबसे अधिक वर्षा वाले जिले

- देवास (+60प्रतिशत), इंदौर (+29प्रतिशत), बुरहानपुर (+22प्रतिशत)।

कम बारिश से बोनी प्रभावित, फसलें बेहाल

कम बारिश के कारण एक ओर जहां खरीफ फसलों का बुवाई कार्य प्रभावित हुआ है वहीं दूसरी ओर बोई गई फसलों की स्थिति अत्यधिक चिंताजनक है। धान फसल की बुवाई एवं रोपाई का कार्य पिछड़ गया है। जिन किसानों के पास सिंचाई का साधन है वे धान की रोपाई में जुट गये हैं लेकिन जो किसान वर्षा के ऊपर आश्रित हैं वे अच्छी बारिश के इंतजार में टकटकी लगाये आसमान की ओर देख रहे हैं। सोयाबीन, कपास, मक्का, ज्वार, बाजरा इत्यादि की बुवाई जिन किसानों ने कर दी है वे पानी के अभाव में सूख रही है। खेतों में दरारें पड़ गई हैं। पिछले 15 दिनों से कई क्षेत्रों में बारिश नहीं होने से किसानों की चिंता बढ़ गई है।

भूमिगत जलस्तर घटा, पीने के पानी की चिंता

प्रदेश के अधिकांश स्थानों पर भूमिगत जलस्तर काफी नीचे खिसक गया है। इस साल अभी तक पर्याप्त बारिश नहीं होने स कुयें, तालाब, ट्यूबवेल इत्यादि का पानी सूखता जा रहा है। भूमिगत जल स्त्रोत नीचे खिसकने से पीने के पानी की चिंता सताने लगी है। ग्रामीण क्षेत्रों में भरपूर बारिश के लिये भजन कीर्तन एवं टोटकों का सहारा भी लिया जा रहा है। इसके बावजूद भी रूठे इन्द्रदेव मानने को तैयार नहीं हो रहे।

116 लाख हेक्टेयर में खरीफ बुवाई पूरी, कम बारिश से खरीफ फसलों पर संकट के बादल

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल। प्रदेश में अनियमित मानसून के कारण इस साल खरीफ फसलों की बुवाई पिछड़ गई है। कृषि संचालनालय, भोपाल से प्राप्त जानकारी अनुसार 17 जुलाई, 2026 तक 115.76 लाख हेक्टेयर में खरीफ फसलों की बुवाई की गई है जो समान अवधि में गत वर्ष की गई बुवाई 116.20 लाख हेक्टेयर से कम है। चालू खरीफ सीजन में 150.45 लाख हेक्टेयर में खरीफ बुवाई का लक्ष्य प्रस्तावित है। सोयाबीन की बुवाई लगभग पूरी हो गई है। अब तक 51.38 लाख हेक्टेयर में सोयाबीन बोया गया है जो समान अवधि में पिछले साल की बुवाई 50.30 लाख हेक्टेयर से अधिक है। मक्का की बुवाई 24.76 लाख हेक्टेयर में की गई है। गत वर्ष

23.67 लाख हेक्टेयर में मक्का बोया गया था। कम बारिश के कारण धान की बुवाई काफी पीछे चल रही है। धान की बुवाई 15.71 लाख हेक्टेयर में हुई है जो पिछले साल की बुवाई 19.81 लाख हेक्टेयर से कम है। चालू खरीफ में 39.63 लाख हेक्टेयर में धान की बुवाई का लक्ष्य रखा गया है। कपास की बुवाई 5.63 लाख हेक्टेयर में की गई है जो पिछले साल से अधिक है। खरीफ की अन्य फसलों में ज्वार 41 हजार हेक्टेयर, बाजरा 3.55 लाख हेक्टेयर, कोदो 37 हजार हेक्टेयर, तुअर 1.57 लाख हेक्टेयर, उड़द 5.47 लाख हेक्टेयर, मूंग 46 हजार हेक्टेयर, मूंगफली 4.75 लाख हेक्टेयर एवं तिल 1.60 लाख हेक्टेयर में बोयी गई है। खरीफ फसलों की बुवाई निर्धारित लक्ष्य का 76.9 प्रतिशत एवं गत वर्ष की अपेक्षा समान अवधि में 79.9 प्रतिशत की गई है। बारिश के अभाव में खरीफ फसलों के ऊपर विपरीत असर परिलक्षित हो रहा है।

शेष पृष्ठ 2 पर....

सीएसआर के माध्यम से कृषि अनुसंधान को खेत तक पहुंचायें: श्री चौहान

केंद्रीय कृषि मंत्री ने की कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी कॉन्क्लेव में सहभागिता

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आईसीएआर द्वारा आयोजित कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी कॉन्क्लेव-2026 में उद्योग जगत से आह्वान किया कि वे अपनी सीएसआर निधि के माध्यम से कृषि अनुसंधान, नवाचार और किसानों के सशक्तिकरण में सक्रिय भागीदारी निभायें। उन्होंने कहा कि देश हमें सब कुछ देता है, इसलिए हमें भी देश और समाज को कुछ लौटाना सीखना चाहिए।

श्री चौहान ने कहा कि कृषि अनुसंधान केवल प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि विज्ञान से किसान तक पहुंचना चाहिए। उन्होंने कॉर्पोरेट जगत से जलवायु-अनुकूल खेती, मृदा स्वास्थ्य, पोषण-सुरक्षित कृषि, कृषि कौशल विकास, महिला किसान सशक्तिकरण और कृषि उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में निवेश बढ़ाने का आग्रह किया। उन्होंने महात्मा गांधी की ट्रस्टीशिप की अवधारणा

का उल्लेख करते हुए कहा कि समाज के संसाधनों का एक हिस्सा जनकल्याण और किसानों के हित में समर्पित करना सभी का नैतिक दायित्व है।

श्री चौहान ने कहा कि कृषि क्षेत्र को मजबूत बनाने के लिए एग्री-टेक स्टार्टअप, ड्रोन तकनीक, कृषि कौशल प्रशिक्षण, फूड प्रोसेसिंग और एग्री-बिजनेस को बढ़ावा देना आवश्यक है। उन्होंने कॉर्पोरेट संस्थानों से युवा किसानों, ड्रोन पायलटों, कृषि उद्यमियों तथा महिला स्वयं सहायता समूहों को सीएसआर योजनाओं के माध्यम से सहयोग देने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि ड्रोन दीदी जैसी पहलें ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई दिशा दे रही हैं और महिला किसानों को विशेष प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

श्री चौहान ने मृदा स्वास्थ्य संरक्षण, संतुलित उर्वरक उपयोग और जलवायु परिवर्तन के अनुरूप कृषि पद्धतियां अपनाने पर जोर देते हुए कहा कि स्वस्थ मिट्टी ही टिकाऊ कृषि की आधारशिला है। उन्होंने कहा कि उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ पौष्टिक और सुरक्षित भोजन उपलब्ध कराना भी कृषि की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। कॉन्क्लेव में कॉर्पोरेट क्षेत्र के प्रतिनिधियों ने कृषि अनुसंधान एवं विकास, नवाचार और किसानों की आजीविका सुधार के लिए आईसीएआर के साथ सहयोग की प्रतिबद्धता व्यक्त की। कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री रामनाथ ठाकुर, भागीरथ चौधरी, आईसीएआर के वरिष्ठ अधिकारी, वैज्ञानिक, उद्योग जगत के प्रतिनिधि तथा किसान संगठनों के सदस्य भी उपस्थित रहे।

एक साल में 44 फसलों की 386 नई किस्में विकसित

आईसीएआर ने 98वां स्थापना दिवस मनाया

नई दिल्ली। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने अपने 98वें स्थापना दिवस पर कृषि क्षेत्र की बड़ी उपलब्धियां और भविष्य की योजनाएं साझा कीं। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि आईसीएआर भारत की कृषि क्रांति का अग्रदूत है। पिछले एक वर्ष में परिषद ने 44 फसलों की 386 उन्नत किस्में विकसित की हैं, जिनमें 94 प्रतिशत जलवायु-अनुकूल और 29 जैव-संवर्धित किस्में शामिल हैं। उन्होंने कहा कि किसान कृषि की आत्मा है और वैज्ञानिक उसका मस्तिष्क है।

इस मौके पर श्री चौहान ने कहा कि आईसीएआर के वैज्ञानिकों के शोध और नई तकनीकों के कारण देश ने खाद्यान्न, बागवानी, दुग्ध और मत्स्य उत्पादन में रिकॉर्ड उपलब्धियां हासिल की हैं। उन्होंने वैज्ञानिकों से किसानों की जरूरतों के अनुसार शोध करने, जलवायु परिवर्तन से निपटने वाली तकनीक विकसित करने और दालों व तिलहनों में आत्मनिर्भरता बढ़ाने पर जोर दिया। केंद्रीय मत्स्य, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री राजीव रंजन सिंह ने कहा कि कृषि विज्ञान केंद्रों का नेटवर्क मजबूत बनाकर नई तकनीकों को किसानों, पशुपालकों और मछुआरों तक तेजी से पहुंचाया जाएगा।

आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. एम.एल. जाट ने बताया कि वर्ष 2025-26 में फसल, बागवानी, पशुपालन और मत्स्य क्षेत्र में उत्पादन बढ़ने से लगभग 1.70 लाख करोड़ रुपये का अतिरिक्त आर्थिक मूल्य सृजित हुआ। इसमें केवल कृषि अनुसंधान का योगदान लगभग 55,000 करोड़ रुपये रहा। उन्होंने बताया कि आईसीएआर की तकनीकें करीब 1 करोड़ किसानों तक सीधे और 5 करोड़ से अधिक किसानों तक मीडिया एवं सोशल मीडिया के माध्यम से पहुंचीं। आईसीएआर ने कृषि तकनीकों के तेजी से व्यावसायीकरण और किसानों तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए 51 उद्योग साझेदारों के साथ 72 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए।

सीएसआर साझेदारी से कृषि नवाचार को मिलेगा बढ़ावा

आईसीएआर कॉन्क्लेव-2026 में 75 से अधिक उद्योग शामिल

नई दिल्ली। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड ने नई दिल्ली स्थित एनएएससी परिसर में आईसीएआर टेक्नोलॉजी पोर्टफोलियो फॉर कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी कॉन्क्लेव-2026 का आयोजन किया। सम्मेलन में 75 से अधिक उद्योगों के लगभग 150 प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जबकि 570 प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े और यूट्यूब लाइव प्रसारण को 1,600 से अधिक लोगों ने देखा। कार्यक्रम में आईसीएआर की सीएसआर-योग्य कृषि प्रौद्योगिकियों, नवाचारों और विस्तार योग्य परियोजनाओं का प्रदर्शन किया गया। इस वर्ष के प्रमुख विषयों में जलवायु परिवर्तन के अनुकूल कृषि, मृदा स्वास्थ्य सुधार, स्वास्थ्य के लिए कृषि, कृषि कौशल विकास तथा कृषि एवं कृषि विस्तार में महिलाओं की भागीदारी शामिल रही।

कॉन्क्लेव से पूर्व हैदराबाद, बेंगलुरु, मुंबई और कोलकाता में क्षेत्रीय रोड शो आयोजित किए गए, जिनमें 500 से अधिक हितधारकों ने भाग लेकर सीएसआर आधारित कृषि परियोजनाओं में सहयोग की रुचि दिखाई। इन कार्यक्रमों में उद्योग, स्टार्टअप, गैर-सरकारी संगठन, मीडिया और आईसीएआर संस्थानों के प्रतिनिधियों ने कृषि प्रौद्योगिकियों के व्यावसायीकरण और ग्रामीण विकास पर विचार-विमर्श किया। सम्मेलन के समापन पर एग्रीकल्चर इंश्योरेंस कंपनी ऑफ इंडिया, एसबीआई फाउंडेशन, यूको बैंक, आईसीआईसीआई फाउंडेशन, बायोवेट प्राइवेट लिमिटेड, फिक्की, वेंकटेश्वर हैचरीज, पिडिलाइट इंडस्ट्रीज और यस बैंक सहित कई प्रमुख संस्थानों ने आईसीएआर और एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड के साथ सीएसआर एवं अनुसंधान सहयोग की प्रतिबद्धता व्यक्त की। आईसीएआर ने विश्वास जताया कि इन साझेदारियों से कृषि प्रौद्योगिकियों का तेजी से प्रसार होगा, सतत कृषि विकास को नई गति मिलेगी और किसानों की आय तथा आजीविका में उल्लेखनीय सुधार होगा।

मानसून ने पकड़ी रफ्तार, कई राज्यों में भारी बारिश का अलर्ट

नई दिल्ली। देशभर में मानसून एक बार फिर सक्रिय हो गया है। भारत मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, अगले 6 से 7 दिनों तक उत्तर-पश्चिम, पूर्वी और पूर्वोत्तर भारत के कई राज्यों में अच्छी बारिश होने की संभावना है। वहीं कुछ राज्यों में भारी से बहुत भारी और कहीं-कहीं अत्यधिक भारी बारिश का अलर्ट भी जारी किया गया है। दूसरी ओर पश्चिम-मध्य और दक्षिण प्रायद्वीपीय भारत के कई हिस्सों में बारिश की गतिविधियां सामान्य से कम रहने का अनुमान है।

मौसम विभाग के मुताबिक, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के कई हिस्सों में अगले एक सप्ताह तक रुक-रुक कर बारिश होती रहेगी। खासतौर पर उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर में भारी से बहुत भारी बारिश होने की संभावना है। इन राज्यों के पहाड़ी इलाकों में भूस्खलन और अचानक बाढ़ जैसी स्थिति भी बन सकती है। आईएमडी ने 20 और 21 जुलाई को कई स्थानों पर बहुत भारी से अत्यधिक भारी बारिश का अनुमान जताया है।

दिल्ली, हरियाणा और पंजाब में 20 से 23 जुलाई के बीच मानसून सक्रिय रहेगा। कुछ स्थानों पर भारी बारिश की भी संभावना है। पूर्वी और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 20 से 24 जुलाई के बीच अच्छी बारिश होने का अनुमान है। 23 से 25 जुलाई के दौरान कई जिलों में भारी बारिश हो सकती है। वहीं राजस्थान के पूर्वी हिस्सों में 20 से 25 जुलाई के बीच और पश्चिमी राजस्थान में 21 से 24 जुलाई के दौरान भारी बारिश की संभावना जताई गई है। गरज-चमक और तेज हवाओं का भी असर देखने को मिल सकता है।

मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में अगले कुछ दिनों तक बारिश का दौर जारी रहेगा। पूर्वी मध्य प्रदेश में 20 से 23 जुलाई तक कई जगह भारी बारिश हो सकती है। पश्चिमी मध्य प्रदेश में भी 20, 22 और 23 जुलाई को भारी बारिश का अनुमान है। छत्तीसगढ़ में 20 से 23 जुलाई तक अच्छी बारिश होने की संभावना है।

पेज एक का शेष....

प्रमुख खरीफ फसलों की बुवाई

फसल	सा. क्षेत्र 2026	गत वर्ष की बोनी	लक्ष्य 2026	समान अवधि में गत वर्ष की बोनी	बुवाई 2026
धान	38.09	42.10	39.63	19.81	15.71
ज्वार	1.01	0.50	0.85	0.81	0.41
मक्का	15.77	27.13	27.53	23.67	24.76
बाजरा	3.51	2.37	3.81	1.74	3.55
कोदो	1.11	1.04	1.57	0.80	0.37
तुअर	1.83	1.49	2.17	2.55	1.67
उड़द	10.56	3.35	5.31	4.80	5.47
मूंग	0.51	0.44	0.79	0.85	0.46
सोयाबीन	60.18	54.70	54.09	50.30	51.30
मूंगफली	4.46	4.17	6.17	3.69	4.75
तिल	3.02	1.86	2.44	1.67	1.60
रामतिल	0.11	0.09	0.36	0.00	0.01
कपास	5.82	5.59	5.72	5.52	5.63
कुल योग	145.98	144.83	150.45	116.20	115.76

(क्षेत्र- लाख हेक्टेयर में)

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 13/- वार्षिक शुल्क- 700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube

उम्मीद से ज़्यादा का वादा

ACE TRACTORS

50 HP Chetak DI 65 (4WD)

4 सिलिण्डर का 4088 CC दमदार ईंजन

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्यूल क्लच
- हैवी ड्यूटी फ्रंट एक्सल (करारो)
- लिफ्ट 2000 kg
- आगे के टायर 9.5x24
- पीछे के टायर 16.9x28
- MRF Tyre

दमदार ट्रैक्टर शानदार परफॉर्मेंस

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- ऑयल ब्रेक्स (तेल में डूबे)
- सिंगल / ड्यूल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

हर कदम हर डगर
ACE TRACTORS
हर किसान का हमसफर

100% Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15–90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन 1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.
Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India
Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

साप्ताहिक सुविचार

निर्दय में भी दयाभाव जागृत करने की कोशिश करों।
– मुनिश्री चिन्मय सागर जी

मूंग उत्पादक किसानों की परेशानी

प्रदेश भर के मूंग उत्पादक किसान इस साल मूंग की सरकारी खरीद को लेकर अत्यधिक परेशान हैं। राज्य सरकार प्रत्येक किसान से 1.20 क्विंटल मूंग प्रति एकड़ के हिसाब से न्यूनतम समर्थन मूल्य पर उपार्जन कर रही है जिससे किसान सहमत नहीं है। किसानों का कहना है कि मूंग का उत्पादन कम से कम 4 से 5 क्विंटल प्रति एकड़ हुआ है। सरकार द्वारा मूंग नहीं खरीदने से निजी क्षेत्र के व्यापारी 6000 रुपये क्विंटल की दर से मूंग खरीद रहे हैं। प्रायवेट व्यापारियों को मूंग बेचने पर किसानों को 2800 रुपये क्विंटल का घाटा हो रहा है। सरकार द्वारा चालू विपणन सीजन के

कृषक दूत सम्पादकीय

लिए मूंग का न्यूनतम समर्थन मूल्य 8768 रुपये प्रति क्विंटल घोषित किया गया है।

सरकार के इस बेतुके निर्णय से किसानों में भारी आक्रोश है। विशेषकर हरदा, होशंगाबाद, सीहोर एवं देवास जिले के किसान अत्यधिक नाराज हैं। विगत दिनों हरदा एवं होशंगाबाद के किसानों ने अनिश्चित कालीन चक्का जाम आंदोलन शुरू कर दिया है। किसानों का कहना है कि प्रायवेट व्यापारियों को मूंग बेचने पर मूंग की उत्पादन लागत तक नहीं निकल रही है। ऐसी विषम परिस्थितियों में किसान सरकार से बार बार अनुरोध कर रहे हैं कि सरकारी खरीदी की सीमा बढ़ाई जाये।

राज्य सरकार के लिये यह बड़े शर्मा की बात है कि सरकार वर्ष 2026 को कृषक कल्याण वर्ष के रूप में मना रही है वहीं अन्नदाता आंदोलन करने को बाध्य है। यह हकीकत है कि ग्रीष्मकालीन मूंग में किसानों की लागत अधिक आती है। सिंचाई एवं अन्य कृषि कार्य का खर्च बढ़ जाता है। प्रदेश में इस साल 12 लाख हेक्टेयर में जायद मूंग किसानों द्वारा लगाई गई थी जिससे उत्पादन भी भरपूर हुआ है। सरकार के समर्थन एवं सहयोग से किसानों ने जायद मौसम में मूंग की खेती शुरू किया जिसके उत्साहवर्धक परिणाम भी मिले। सरकार द्वारा शत प्रतिशत मूंग नहीं खरीदने से किसान अगले साल से मूंग की खेती छोड़ने पर विवश होंगे। किसानों की परेशानी को देखते हुए सरकार को मूंग की खरीदी करना चाहिए। केन्द्र मूंग खरीदी में जो भी सहयोग करें उससे हटकर राज्य सरकार को अपने स्तर पर मूंग खरीदी का निर्णय लेना चाहिए। इस तरह का प्रोत्साहन देने से किसानों का हौंसला बुलंद होगा और वे मध्यप्रदेश के कृषि विकास में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

विपरीत परिस्थिति में कृषकों के लिये उपयोगी सलाह

शाजापुर। वर्तमान परिस्थिति में किसान भाई खरीफ की बोनी कर चुके हैं लेकिन पानी की लंबी खींच के कारण सोयाबीन फसल में पानी की कमी महसूस हो रही है। केन्द्र के वैज्ञानिकों डॉ. एस.एस. धाकड, डॉ. गायत्री रावल, डॉ. डी.के. तिवारी एवं डॉ. मुकेश सिंह ने खेतों पर भ्रमण के बाद किसान भाइयो को ऐसी परिस्थिति से निपटने के लिए उपयोगी सलाह दी है।

- कुयें या अन्य कसिंचाई का साधन उपलब्ध होने पर हल्की सिंचाई मिनी स्प्रिंकलर से करें।
- कृषक भाई वर्षा जल को रिचार्ज करने हेतु कुआं रिचार्ज, नलकूप रिचार्ज या खेत में जल निकास नाली के जल वर्षा जल बहाव की दिशा में भूजल संवर्धन संरचना बनायें जिससे वर्षा जल रिचार्ज हो सकें।
- सोयाबीन 15 दिनों से ज्यादा की हो चुकी है, ऐसे किसान भाई खेतों में ट्रैक्टर चालित/बैल चालित /हस्त चालित डोरा चलाकर नमी संरक्षित करें।
- वर्तमान समय को देखते हुए सोयाबीन की फसल में तना मक्खी कीट लगने की आशंका है। इसके नियंत्रण हेतु खेतों की निगरानी रखे और तना मक्खी का प्रकोप होने पर इमिडाक्लोप्रिड दवा 125 मिली प्रति हेक्टेयर या थायो मेथोक्साम दवा 350 मिली प्रति हेक्टेयर 600 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- खरपतवारनाशी एवं कीटनाशी को साथ में मिलाकर छिड़काव बिल्कुल न करें।
- बोनी के 15-20 दिन बाद खेतों में पर्याप्त नमी होने पर खरपतवारनाशी का छिड़काव कर सकते हैं।
- खरपतवारनाशी का प्रयोग कट नोजल/फ्लेटपेन नोजल एवं कीटनाशी का कोन नोजल से छिड़काव हेतु प्रयोग करें।
- दवा छिड़कते समय बीड़ी/जर्दा या अन्य वस्तुयें न खायें।
- खरपतवारनाशी एवं कीटनाशी दवा खरीदते समय पक्का बिल जरूर लें।
- दवा छिड़कते समय स्प्रेयर को पानी से धोकर अच्छी तरह साफ करें।
- दवा का छिड़काव हमेशा हवा की दिशा में ही करें ताकि दवा की बूंदे शरीर पर न पड़ें।
- दवा छिड़कते समय हाथ में दस्ताने, आंखों पर चश्मा पहने एवं नाक को कपड़े से ढककर रखे।

अल नीनो के प्रभाव को कम करने के लिए कृषक मेड़ नाली विधि से करें बुवाई

मुरैना। वर्तमान में भारतीय मौसम विभाग के अनुसार अल नीनो का प्रभाव देखा जा रहा है। अल नीनो के प्रभाव में मानसून के दौरान कम वर्षा अथवा अधिक वर्षा अन्तराल होने की स्थिति देखी जाती है परिणामस्वरूप सूखा अथवा अन्तरवर्तीय सूखा जैसी स्थिति निर्मित होने की संभावना हो सकती है। ऐसी परिस्थिति में किसानों को सलाह दी जाती है कि उन्हें कम पानी वाली फसलों का चुनाव करना चाहिए। डॉ. बी.एस. कंसाना, वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, मुरैना द्वारा कृषकों को सलाह दी कि मेड़ नाली विधि से मूंग, उड़द, अरहर इत्यादि फसलों की बुवाई करें। जिससे कम पानी अथवा अचानक अति वर्षा की स्थिति में फसलों को होने वाली हानि से बचाया जा सके। इसी के साथ-साथ दो वर्षा के बीच लम्बा अन्तराल होने पर (अन्तरवर्तीय सूखा) बाजरा, ज्वार एवं मक्का इत्यादि फसलों में इन्टर कल्चर ऑपरेशन (कुरप) करें। जिससे खरपतवार की समस्या के समाधान के साथ-साथ जल संरक्षण भी संभव हो ताकि फसलों को पानी की कमी से होने वाले प्रभाव को कम कर फसलों की अच्छी उत्पादकता सुनिश्चित की जा सके।

डॉ. कसाना ने बताया कि मेड़ नाली विधि एवं कतार विधि से बुवाई करने पर बीज का अंकुरण बेहतर होता है। पौधों की बढ़वार अच्छी होती है। पानी और खाद का उपयोग संतुलित होता है। सूखा और अधिक वर्षा दोनों स्थितियों में फसल अपेक्षाकृत सुरक्षित रहती है एवं उत्पाद अधिक और लाभ बेहतर होता है। उन्होंने बताया कि किसान भाई अल नीनो के प्रभाव को करने के लिए फसल चक्र अपना सकते हैं तथा अधिक पानी चाहने वाली फसल जैसे- धान के स्थान पर सोयबीन, उड़द, तिल मक्का, ज्वार, बाजरा और मूंग इत्यादि फसलों का फसल चक्र में उपयोग कर सकते हैं। वर्षा कम होने की स्थिति में धान की फसल में अधिक जल उपयोग के कारण उत्पादन में कमी देखी जा सकती है। अतः कृषकों को फसल चक्र अपनाकर कम पानी चाहने वाली उपरोक्त फसलों को फसल चक्र में शामिल करने की सलाह दी जाती है। डॉ. कंसाना ने बताया कि फसल चक्र से वर्षा जल का समुचित उपयोग होता है। भूमिगत जल की हानि कम होती है। भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहती है।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का 98वां स्थापना दिवस का आयोजन

रतलाम। कृविके जावरा (रतलाम) के प्रशासनिक भवन में भाकृअप नई दिल्ली का 98वां स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने किसानों की आर्थिक स्थिति और अधिक सुदृढ़ करने के लिए आई.सी.ए.आर., कृषि विवि, कृषि विज्ञान केन्द्र को किसानों के साथ एक बार पुनः एक पखवाड़ा के लिए कृषि की आधुनिकतम तकनीकी से किसानों को अवगत कराने का आव्हान किया और कृषि विज्ञान केन्द्रों की कुशलता की प्रशंसा की। आई.सी.ए.आर. के महानिदेशक डॉ. एम.एल. जाट द्वारा नवीनतम विकसित तकनीकी का पी.पी.टी. के माध्यम से प्रस्तुतीकरण एवं निजी क्षेत्र की कंपनियों के साथ हुए विकास एवं अनुबंध की रूपरेखा प्रस्तुत की गई।

अनमोल वचन

भला नहीं कर सकते तो बुरा करने की कोशिश मत करों
– राधास्वामी

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

आषाढ़ शुक्ल/श्रावण कृष्ण विक्रम संवत 2083 ईस्वी सन् 2026

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
21 जुलाई 26	मंगलवार	आषाढ़ शुक्ल पक्ष-7	
22 जुलाई 26	बुधवार	आषाढ़ शुक्ल पक्ष-8	
23 जुलाई 26	गुरुवार	आषाढ़ शुक्ल पक्ष-9	
24 जुलाई 26	शुक्रवार	आषाढ़ शुक्ल पक्ष-10	
25 जुलाई 26	शनिवार	आषाढ़ शुक्ल पक्ष-11	देवशयनी ग्यारस
26 जुलाई 26	रविवार	आषाढ़ शुक्ल पक्ष-12	प्रदोष व्रत
27 जुलाई 26	सोमवार	आषाढ़ शुक्ल पक्ष-13	
28 जुलाई 26	मंगलवार	आषाढ़ शुक्ल पक्ष-14	
29 जुलाई 26	बुधवार	आषाढ़ शुक्ल पक्ष-15	गुरू पूणिमा
30 जुलाई 26	गुरुवार	श्रावण कृष्ण पक्ष-1	
31 जुलाई 26	शुक्रवार	श्रावण कृष्ण पक्ष-2	पंचक
1 अगस्त 26	शनिवार	श्रावण कृष्ण पक्ष-3	पंचक
2 अगस्त 26	रविवार	श्रावण कृष्ण पक्ष-4	पंचक
3 अगस्त 26	सोमवार	श्रावण कृष्ण पक्ष-5	पंचक प्रथम सावन सोमवार

● डॉ. पी. एल. अम्बुलकर
वैज्ञानिक, पौध संरक्षण (कीट शास्त्र)
कृषि विज्ञान केन्द्र, डिण्डौरी (म.प्र.)

फॉल आर्मीवर्म से मक्के को बचायें

मक्का (वानस्पतिक नाम ू मं उंले) एक प्रमुख खाद्य फसल हैं, जो मोटे अनाजो की श्रेणी में आता है। भारत के अधिकांश मैदानी भागों से लेकर 2700 मीटर उँचाई वाले पहाडी क्षेत्रों तक मक्का सफलतापूर्वक उगाया जाता है। इसे सभी प्रकार की मिट्टियों में उगाया जा सकता है तथा बलुई, दोमट मिट्टी मक्का की खेती के लिये बेहतर समझी जाती है।

मक्का एक ऐसा खाद्यान्न है जो मोटे अनाज की श्रेणी में आता तो है परंतु इसकी पैदावार पिछले दशक में भारत में एक महत्त्वपूर्ण फसल के रूप में मोड़ ले चुकी है क्योंकि यह फसल सभी मोटे व प्रमुख खाद्यानों की बढ़ोत्तरी दर में सबसे अग्रणी है।

भारत में मक्का का महत्त्व एक केवल खाद्यान्न की फसल के रूप मे जाना जाता है। भारत में मक्का की खेती जिन राज्यों में व्यापक रूप से की जाती है वे हैं - आन्ध्र प्रदेश, बिहार, कर्नाटक, राजस्थान, उत्तर प्रदेश इत्यादि। इनमे से राजस्थान में मक्का का सर्वाधिक क्षेत्रफल है व आन्ध्रा में सर्वाधिक उत्पादन होता है। परन्तु मक्का का महत्व जम्मू कश्मीर, हिमाचल, पूर्वोत्तर राज्यों, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ, महाराष्ट्र, गुजरात व झारखण्ड में भी काफी अधिक है। इसकी उपज को कीट-व्याधियाँ प्रभावित करते है । प्रमुख कीट में फॉल आर्मी वर्म अत्यधिक प्रभावित करता है ।

फॉल आर्मी वर्म कीट का वैज्ञानिक नाम स्पोडोप्टेरा फ्रुजिपरडा Spodoptera fruziperda है , सबसे पहले 2015 में अमेरिका में पाया गया था। इसके बाद 2017 के अंत तक यह 54 अफ्रीकी देशों में से 44 देशों में फैल चुका है। वहां इस कीट ने काफी नुकसान पहुंचाया है। मई, 2018 में कर्नाटक के शिवगोमा में पाया गया। इसके बाद हसन, बेंगलुरू व चिकबालापुर में देखा गया। इसके आंध्र प्रदेश, गुजरात व बिहार में भी पाए जाने की सूचना है। यह कीट एक दिन में 100 किमी तक की उड़ान कर लेता है। इस कीड़े की पहली पसंद मक्का है लेकिन यह चावल, ज्वार, बाजरा, गन्ना, सब्जियाँ और कपास सहित 80 से अधिक पौधों की प्रजातियों को खा सकता है। यह कीट पहली बार 2016 की शुरुआत में मध्य और पश्चिमी अफ्रीका में पाया गया था और कुछ ही दिनों में लगभग पूरे उप-सहारा अफ्रीका में तेजी से फैल गया। वर्ष 2017 में दक्षिण अफ्रीका में इस कीट के फैलने के कारण फसलों को भारी नुकसान हुआ था। ये कीट सबसे पहले पौधे की पत्तियों पर हमला करते हैं कीट एक बार में 900-1000 अंडे दे सकते हैं।

भारतीय उपमहाद्वीप में सबसे पहले मई, 2018 में इस विनाशकारी कीट की मौजूदगी कर्नाटक में दर्ज की गई थी और तब से अब तक यह पश्चिम बंगाल तथा गुजरात तक पहुँच चुका है। उचित जलवायु परिस्थितियों के कारण यह न केवल पूरे भारत में बल्कि एशिया के अन्य पड़ोसी देशों में भी फैल सकता है। कर्नाटक राज्य भारत में सबसे बड़े मक्का उत्पादकों में से एक है और मक्का देश में व्यापक रूप से उत्पादन किया जाने वाला तीसरा अनाज है। मध्य प्रदेश में जिला छिन्दवाड़ा जिसे कॉर्न सिटी के नाम से जाना जहा रहा है, मक्का की उत्पादकता मे अग्रणी जिला है ।

- **पोषक पौधे:** यह कीट 80 प्रकार की फसलो पर अपना गुजारा कर सकता है,प्राय: मक्का, धान, गन्ना, कपास,ज्वार,सोयाबिन आदि फसलों पर ज्यादा तौर पर ये दिखाई देता है,परंतु इसका पसंदीदा भोजन मक्का है।
- **पहचान के लक्षण:** फॉल आर्मी वर्म कीट छोटी से तीसरी अवस्था तक इसके लार्वा को पहचानना मुश्किल है, लेकिन जैसे-जैसे बड़ा होता, इसकी पहचान आसान हो जाती है। इसका लार्वा भूरा, धूसर रंग का होता है, जिसके शरीर के साथ अलग से ट्यूबरकल दिखता है। इस कीट के पीठ के नीचे तीन पतली सफेद धारियाँ और सिर पर एक अलग सफेद उल्टा अंग्रेजी शब्द का 'वाई' के आकार का निशान दिखता है । साथ ही लार्वा के 8 वे बॉडी सेगमेंट पर 4 बिंदु वर्गाकार आकृति में देखे जा सकते हैं। फॉल आर्मीवर्म कीट के सिर के तरह चार बिंदु होते हैं। यह इसकी पहचान का तरीका है।

जीवन चक्र

- **अंडे:** एक बार में दो सौ तक अंडे इसकी वयस्क मादा एक बार में 50 से 200 तक अंडे देती है। यह मादा अपने जीवन काल (7से 21 दिन) में 10 गुच्छे अंडे यानी 1700 से 2000 तक अंडे दे सकती है। अण्डे गुंबद आकार के होते है ,जो लगभग 0.4 मिमी. व्यास एवं 0.3 मिमी. ऊँचाई के होते है । मादा पत्तियों के नीचे अण्डों को रखना पसंद करती ह। ये अंडे 2 से 3 दिन में फूट जाते हैं और इनमें से लार्वा निकलते हैं।
- **इल्ली:** लारवल पीरियड 14 से 22 दिन होता है,यह छह अलग-अलग इंस्टारों से गुजरती है परिपक्व इल्ली की लंबाई लगभग1.5 से 2 इंच (38 से 51 इंच) होती है ।
- **कोकून/षंखी:** इल्ली एक षंखी में 8 से 30 दिनों के लिए परिवर्तित होती है। कोकून अवधि पर्यावरण में तापमान पर निर्भर करती है ।
- **वयस्क:** वयस्क पतंगे मे 32 से 40 मिमी. पंख फैलाव होता है ,अगले पंखों के सिर पर भूरे रंग का निषान होता है और पिछला पंख सफेद होता है । एक वयस्क लगभग 10 से 21 दिनों तक जीवित रहता है । एक वयस्क रात में 100 किमी. तक एवं अपने जीवनकाल में 2000 किमी. तक उड़ सकती है । इस कीट का जीवन चक्र 30 से 61 दिन का होता है । जीवन चक्र गर्मी के दौरान 30 दिनों के भीतर तथा बसंत और शरद ऋतु के मौसम के दौरान 60 दिनों के भीतर पूरा हो जाता है । सर्दियों के दौरान जीवन चक्र 80 से 90 दिनों तक रहता है । एक वर्ष में में इनकी पीढ़ियों की संख्या जलवायु के आधार पर भिन्न होती है ।
- **क्षति के लक्षण:** पौधों को ऐसे पहुंचाता है नुकसान- छोटी लार्वा पौधों की पत्तियों को खुरचकर खाती है, जिससे पत्तियों पर सफेद धारियां दिखाई देते हैं। जैसे-जैसे लार्वा बड़ी होती है, पौधों की ऊपरी पत्तियों को खा जाती है और लार्वा बड़ा होने के बाद मक्का के गाले में घुसकर पत्तियां खाती रहती हैं। पत्तियों पर बड़े गोल-गोल छिद्र एक ही कतार में नजर आते हैं ये कीट सबसे पहले पौधे की पत्तियों पर हमला करते हैं, इनके हमले के बाद पत्तियाँ ऐसी दिखाई देती हैं जैसे उन्हें कैंची से काटा गया हो ।

आर्मीवर्म के फैलाव की वजह

- जलवायु परिवर्तन के साथ-साथ संक्रमित और गैर-संक्रमित क्षेत्रों के बीच बढ़ता व्यापार और परिवहन फॉल आर्मीवार्म के फैलाव के कारण हैं, जिसने संभावित रूप से दुनिया की खाद्य सुरक्षा को खतरे में डाल दिया है। गर्म और आर्द्र तापमान (20 से 32 डिग्री सेल्सियस के बीच) तथा लंबे व शुष्क समयांतराल फॉल आर्मीवार्म के प्रजनन के लिये अनुकूल कारक हैं।
- प्रजनन में शीघ्रता।
- भारतीय उपमहाद्वीप के उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु का आर्मीवार्म के अनुकूल होना, जो उन्हें पूरे साल भोजन उपलब्ध कराती है।

(शेष पृष्ठ 13 पर)

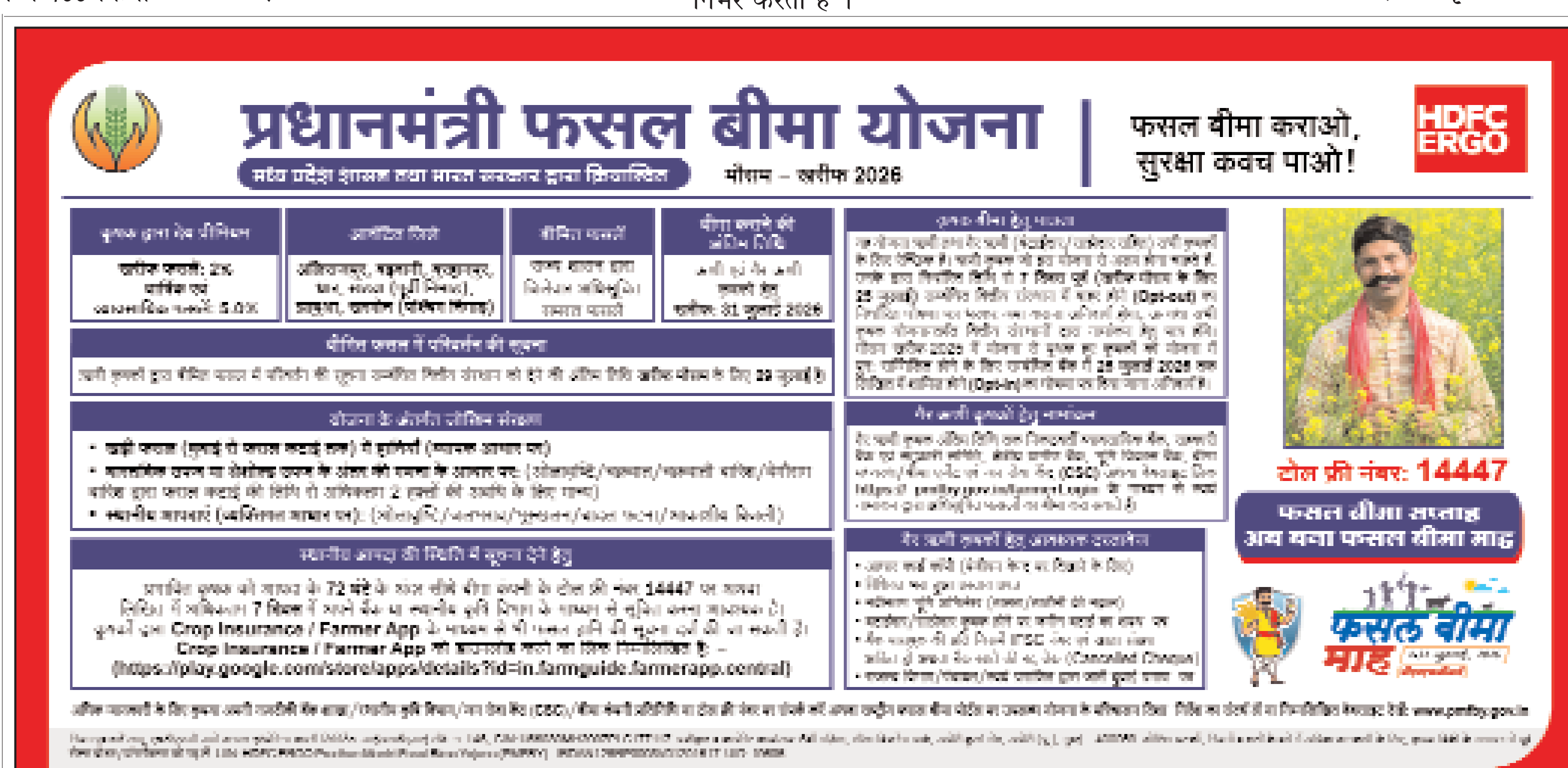

सोयाबीन की सलामती कैसे सुनिश्चित करें?

मध्य प्रदेश में प्रमुख रोग और कीट, पहचान से लेकर रासायनिक नियंत्रण तक

- **प्रथम कुमार सिंह** (पी.एच.डी. स्कॉलर)
- **डॉ. प्रद्युम्न सिंह** (वैज्ञानिक कीट शास्त्र), बी.एम. कृषि महाविद्यालय, खण्डवा
- **डॉ. रजनी सिंह सासोड़े** (विभाग प्रमुख, पादप रोग विज्ञान)
- **डॉ. सुचारिता मोहपात्रा** (फैकल्टी, पादप रोग विज्ञान) कृषि महाविद्यालय, रा.वि.सिं.कृ.वि.वि., ग्वालियर (म.प्र.)

मप्र को अक्सर 'सोया स्टेट' कहा जाता है, और यह नाम कोई अतिशयोक्ति नहीं है - मालवा के इंदौर, देवास, उज्जैन, धार, खरगोन जैसे जिलों में खरीफ के मौसम में जहाँ तक नजर जाए, वहाँ तक सोयाबीन के हरे-भरे खेत दिखते हैं। लेकिन यही फसल जितनी व्यापक है, उतनी ही संवेदनशील भी है।

मौसम में हल्का सा बदलाव - ज्यादा नमी हो या अचानक सूखा पड़ जाए - तुरंत किसी न किसी बीमारी या कीट को न्योता दे देता है। और चूँकि सोयाबीन की बुवाई का दायरा इतना बड़ा है, इसलिए यहाँ जरा सी लापरवाही भी बड़े पैमाने पर नुकसान में बदल जाती है।

इस लेख में हम मध्य प्रदेश में सोयाबीन को सबसे ज्यादा नुकसान पहुँचाने वाली बीमारियों और कीटों की बात करेंगे - उनके लक्षण, खेत में पहचान करने का तरीका, और रासायनिक नियंत्रण के लिए इस्तेमाल होने वाले रसायन उनकी अनुशंसित मात्रा (dosage) के साथ।

सोयाबीन की प्रमुख बीमारियाँ

1. पीला मोजैक विषाणु रोग: यह सोयाबीन की सबसे चर्चित और सबसे डरावनी बीमारी है, क्योंकि यह विषाणु जनित है और एक बार फैलना शुरू हो जाए तो पूरा खेत महज कुछ हफ्तों में प्रभावित हो सकता है। इसे सफेद मक्खी (2hitefl4) फैलाती है, इसलिए बीमारी और कीट दोनों की चर्चा साथ-साथ करना जरूरी है।

पहचान कैसे करें:
- पत्तियों पर अनियमित आकार के पीले और हरे धब्बे बन जाते हैं, जिससे पत्ती पर एक धब्बेदार, मोजैक जैसा पैटर्न दिखता है।
- गंभीर संक्रमण में पूरी पत्ती पीली पड़ जाती है, पौधे की बढ़वार रुक जाती है और फलियाँ छोटी, विकृत या बिल्कुल खाली रह जाती हैं।
- शुरुआती अवस्था में संक्रमित पौधे खेत में छिटपुट, अलग-थलग दिखते हैं, जो बाद में धीरे-धीरे पूरे खेत में फैल जाते हैं।

नियंत्रण
- चूँकि यह विषाणु जनित बीमारी है, सीधा रासायनिक इलाज संभव नहीं है, इसलिए इसके वाहक सफेद मक्खी को नियंत्रित करना ही मुख्य रणनीति है।
- थायोमेथोक्जाम 25% WG — 0.2 ग्राम प्रति लीटर पानी
- इमिडाक्लोप्रिड 17.8% SL — 0.3 मिली प्रति लीटर पानी
- संक्रमित पौधों को शुरुआत में ही उखाड़कर नष्ट कर देना और प्रतिरोधी किस्मों का चयन करना दीर्घकालिक उपाय है।

2. सोयाबीन रस्ट / गेरुआ रोग : यह फफूंद जनित बीमारी है जो अत्यधिक नमी और लगातार बारिश की स्थिति में तेजी से फैलती है, इसलिए मध्य प्रदेश के उन इलाकों में जहाँ अगस्त-सितंबर में लंबे समय तक बादल छाए रहते हैं, यह चिंता का विषय बन जाती है।

पहचान कैसे करें
- पत्तियों की निचली सतह पर छोटे-छोटे, हल्के भूरे से लाल-भूरे रंग के उभरे हुए दाने (पुस्टूल) बनते हैं।
- गंभीर स्थिति में ये पुस्टूल फटकर पाउडर जैसा पदार्थ छोड़ते हैं, और पत्तियाँ समय से पहले पीली पड़कर गिरने लगती हैं।
- नीचे की पुरानी पत्तियों से बीमारी शुरू होकर ऊपर की ओर फैलती है।

नियंत्रण
- हेक्साकोनाजोल 5% EC — 2 मिली प्रति लीटर पानी
- टेबुकोनाजोल 25.9% EC — 1 मिली प्रति लीटर पानी
- प्रोपिकोनाजोल 25% EC — 1 मिली प्रति लीटर पानी

3. जड़ एवं तना सड़न / चारकोल रॉट : यह बीमारी खासतौर पर उस समय सक्रिय होती है जब बारिश के बाद अचानक लंबा सूखा पड़ जाए, यानी पौधे पर नमी का तनाव (moisture stress) हो। मध्य प्रदेश की अनियमित मानसूनी बारिश के पैटर्न में यह समस्या हर साल किसी न किसी क्षेत्र में देखने को मिलती है।

पहचान कैसे करें
- पौधे की जड़ और तने के आधार पर भूरा-काला रंग दिखने लगता है, तने को चीरने पर अंदर काले, कोयले के चूरे जैसे बारीक दाने (स्क्लेरोशिया) मिलते हैं।
- पौधा अचानक मुरझाकर सूख जाता है, खासकर फूल आने या फली भरने की अवस्था में।
- प्रभावित पौधे खेत में छोटे-छोटे झुंडों में मरते हुए दिखते हैं, अक्सर ऊँचे या कम नमी वाले हिस्सों में ज्यादा।

नियंत्रण
- बीजोपचार के लिए ट्राइकोडर्मा विरिडी आधारित जैव-फफूंदनाशी — 4 से 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज
- कार्बेन्डाजिम 50% WP से बीजोपचार — 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज
- खेत में नमी संरक्षण और संतुलित उर्वरक प्रबंधन रोकथाम में सबसे कारगर उपाय है।

4. बैक्टीरियल पश्चूल / जीवाणु फुंसी रोग: यह जीवाणु जनित बीमारी है जो पत्तियों पर छोटे उभरे हुए फुंसी जैसे धब्बे बनाती है, और अक्सर किसान इसे फंगस समझकर गलत दवा डाल देते हैं।

पहचान कैसे करें
- पत्तियों पर छोटे, पीले किनारे वाले भूरे धब्बे बनते हैं, जिनके बीच में एक छोटा उभरा हुआ फुंसी जैसा उभार होता है — यही इसकी सबसे पक्की पहचान है।
- गंभीर संक्रमण में पूरी पत्ती झुलसी हुई दिखती है और समय से पहले गिर जाती है।

नियंत्रण
- कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP — 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी
- स्ट्रेप्टोसाइक्लिन + कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का मिश्रण — स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 0.1 ग्राम + कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी
- बीजोपचार के लिए कार्बेन्डाजिम — 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज, जीवाणु के प्रारंभिक स्रोत को कम करता है।

5. एन्थ्रेक्नोज / फली सड़न : यह बीमारी मुख्य रूप से फसल की अंतिम अवस्था में, यानी फली पकने के समय ज्यादा नुकसान पहुँचाती है।

पहचान कैसे करें
- तने, पत्तियों की डंडियों और फलियों पर अनियमित, गहरे भूरे से काले रंग के धँसे हुए धब्बे बनते हैं।
- संक्रमित फलियाँ मुड़ी हुई, सिकुड़ी हुई दिखती हैं और दाना अंदर ही सड़ जाता है।
- नमी वाले मौसम में धब्बों पर काले बिंदुओं जैसी संरचना (फ्रूटिंग बॉडी) साफ दिखाई देती है।

नियंत्रण
- कार्बेन्डाजिम + मैंकोजेब (संयुक्त फॉर्मूलेशन) — 2 ग्राम प्रति लीटर पानी
- थायोफिनेट मिथाइल 70% WP — 1 ग्राम प्रति लीटर पानी

6. सर्कोस्पोरा पत्ती धब्बा / फ्रॉगआई लीफ स्पॉट : यह फफूंद जनित बीमारी पत्तियों पर विशिष्ट 'मेंढक की आँख' जैसे धब्बे बनाती है, इसीलिए इसे 'फ्रॉगआई लीफ स्पॉट' भी कहा जाता है।

पहचान कैसे करें:
- पत्तियों पर छोटे, गोल, भूरे किनारे और बीच में हल्के धूसर रंग के धब्बे बनते हैं, जो देखने में आँख जैसे लगते हैं।
- गंभीर स्थिति में धब्बे आपस में मिलकर बड़े झुलसे हुए पैच बना देते हैं, और पत्तियाँ समय से पहले गिर जाती हैं।

नियंत्रण:
- मैंकोजेब 75% WP — 2 से 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी
- टेबुकोनाजोल 25.9% EC — 1 मिली प्रति लीटर पानी

सोयाबीन के प्रमुख कीट

1. गर्डल बीटल / चक्र भृंग : यह कीट सोयाबीन का 'ट्रेडमार्क' कीट माना जाता है, क्योंकि इसका नुकसान बहुत विशिष्ट और आसानी से पहचान में आने वाला होता है।

पहचान कैसे करें
- वयस्क मादा तने या शाखा पर दो समानांतर गोलाकार कट (गर्डल) बना देती है, जिससे उस हिस्से के ऊपर का भाग सूखने लगता है और आसानी से टूट जाता है।
- तने के अंदर सफेद रंग का लार्वा सुरंग बनाते हुए मिलता है, जो नीचे की ओर बढ़ता जाता है।
- प्रभावित पौधे में ऊपर की पत्तियाँ और शाखाएँ मुरझाकर लटक जाती हैं, जबकि बाकी पौधा हरा-भरा दिखता है।

नियंत्रण
- थायोक्लोप्रिड 21.7% SC — 1 मिली प्रति लीटर पानी
- क्लोरएंट्रानिलिप्रोल 18.5% SC — 0.3 मिली प्रति लीटर पानी
- प्रभावित तनों और शाखाओं को काटकर नष्ट करना रासायनिक छिड़काव के साथ जरूरी है, ताकि लार्वा खेत में दोबारा न फैले।

2. तना मक्खी : यह छोटा कीट भी तने के अंदर घुसकर नुकसान पहुँचाता है, लेकिन इसका लक्षण गर्डल बीटल से थोड़ा अलग होता है।

पहचान कैसे करें:
- पत्तियों की डंडियों और मुख्य तने में लार्वा सुरंग बनाकर ऊतक को खोखला कर देता है, जिससे तना कमजोर होकर मुड़ या टूट जाता है।
- शुरुआती अवस्था में प्रभावित पत्तियों की डंडी पर हल्की सूजन या मलिनकिरण (discoloration) दिखता है।

(शेष पृष्ठ 13 पर)

- अवधेश कुमार पटेल
- के.के. देशमुख
- पी.एल. अंबुलकर

कृषि विज्ञान केंद्र, डिंडोरी (म.प्र.)

वर्षा ऋतु में फल पौधे प्रसारण की विभिन्न विधियां

वर्षा ऋतु (जून-सितंबर) पौध प्रसारण के लिए सबसे उपयुक्त समय माना जाता है, क्योंकि इस दौरान वातावरण में पर्याप्त नमी, अनुकूल तापमान तथा पौधों की सक्रिय वृद्धि होती है। इस मौसम में जड़ बनने की क्षमता अधिक होने से पौधों का जीवित रहने का प्रतिशत भी बढ़ जाता है।

बीज द्वारा प्रसारण

यह लैंगिक प्रसारण की सबसे सामान्य विधि है। इसका उपयोग वन पौधों, सब्जियों, फूलों तथा अनेक फलदार पौधों के उत्पादन में किया जाता है। वर्षा ऋतु में मिट्टी में पर्याप्त नमी होने के कारण बीजों का अंकुरण बेहतर होता है।

- **उदाहरण:** नीम, करंज, अमलतास, सहजन, पपीता।
- **लाभ**
- कम लागत में अधिक संख्या में पौधे तैयार किए जा सकते हैं।
- पौधों में जड़ तंत्र मजबूत विकसित होता है।
- बड़े स्तर पर पौध उत्पादन के लिए उपयुक्त।

हानियां

- मातृ पौधे के समान गुण हमेशा प्राप्त नहीं होते।
- फल देने में अपेक्षाकृत अधिक समय लगता है।

कलम द्वारा प्रसारण

यह सबसे सरल एवं लोकप्रिय अलैंगिक प्रसारण विधि है, जिसमें पौधे की शाखा से नया पौधा तैयार किया जाता है।

- **प्रक्रिया**
- स्वस्थ एवं परिपक्व 15-20 सेमी लंबी शाखा चुनें।
- नीचे की पत्तियां हटा दें।
- आवश्यकता होने पर रूटिंग हार्मोन का प्रयोग करें।
- कलम को रेतीली या बलुई-दोमट मिट्टी में लगाएं।
- नियमित नमी बनाए रखें तथा तेज धूप से बचाएं।
- **उपयुक्त पौधे:** अनार, अंगूर, शहतूत, गुलाब, बोगनवेलिया, गुड़हल।
- **लाभ**
- मातृ पौधे के समान गुण प्राप्त होते हैं।
- पौधे जल्दी तैयार होते हैं।
- फल एवं फूल जल्दी प्राप्त होते हैं।
- **गूटी**

वर्षा ऋतु में गूटी बांधने की सफलता सर्वाधिक रहती है क्योंकि वातावरण में नमी अधिक होती है।

- **प्रक्रिया**
- एक वर्ष पुरानी स्वस्थ शाखा चुनें।
- लगभग 2-3 सेमी छाल हटाएं।
- उस स्थान पर नम काई या नम मिट्टी लगाकर पॉलीथीन से बाँध दें।
- 30-60 दिनों में जड़ें बनने पर शाखा काटकर रोप दें।
- **उपयुक्त पौधे:** लीची, अमरूद, नींबू, चीकू, अनार।
- **लाभ**
- सफलता प्रतिशत अधिक।
- पौधे शीघ्र फल देना प्रारंभ करते हैं।
- मातृ पौधे के गुण सुरक्षित रहते हैं।

चश्मा चढ़ाना

इस विधि में अच्छी किस्म की एक कली को दूसरे पौधे पर लगाया जाता है।

- **उपयुक्त समय:** जुलाई-अगस्त
- **उपयुक्त फसलें:** नींबू वर्गीय फल, गुलाब, बेर
- **लाभ**
- उत्कृष्ट किस्मों का गुण सुरक्षित रहता है।
- कम समय में गुणवत्तापूर्ण पौधे तैयार होते हैं।
- पौधों की वृद्धि एवं उत्पादन अच्छा रहता है।

कलम बाँधना

इस विधि में दो अलग-अलग पौधों के भागों (स्कायन एवं रूटस्टॉक) को जोड़कर एक नया पौधा तैयार किया जाता है।

- **प्रमुख प्रकार**
- वेज ग्राफ्टिंग
- सॉफ्टवुड ग्राफ्टिंग
- एप्रोच ग्राफ्टिंग

उपयुक्त पौधे: आम, कटहल, अमरूद, काजू।

- **लाभ**
- उच्च गुणवत्ता वाले पौधे प्राप्त होते हैं।
- जल्दी फल देने वाले पौधे तैयार होते हैं।
- रोग एवं प्रतिकूल परिस्थितियों के प्रति सहनशीलता बढ़ सकती है।

सकर एवं ऑफसेट द्वारा प्रसारण

कुछ पौधों में जड़ों या तनों के पास नए पौधे निकलते हैं, जिन्हें अलग करके रोप दिया जाता है।

उदाहरण: केला, लेमनग्रास, पुदीना।

- **लाभ**
- सरल एवं कम लागत वाली विधि।
- पौधे शीघ्र स्थापित हो जाते हैं।
- राइजोम, कंद एवं बल्ब द्वारा प्रसारण
- भूमिगत तनों एवं भंडारण अंगों द्वारा भी पौध प्रसारण किया जाता है।
- **उदाहरण**
- अदरक-राइजोम
- हल्दी-राइजोम
- अरबी-कंद
- प्याज-बल्ब
- लहसुन-कलियां
- लाभ
- पौधे जल्दी बढ़ते हैं।
- उत्पादन समान एवं गुणवत्तापूर्ण होता है।
- वर्षा ऋतु में पौध प्रसारण हेतु आवश्यक सावधानियां
- केवल स्वस्थ एवं रोगमुक्त मातृ पौधों का चयन करें।
- पौधशाला में जल निकास की उचित व्यवस्था रखें।
- पौधशाला में लगभग 50 प्रतिशत शेडनेट का उपयोग करें।
- अधिक वर्षा की स्थिति में जलभराव न होने दें।
- आवश्यकता अनुसार फफूंदीनाशी का प्रयोग करें।
- पौधों में नियमित नमी बनाए रखें, लेकिन अत्यधिक सिंचाई से बचें।
- पौधों को तेज हवा एवं सीधे वर्षा के प्रहार से सुरक्षित रखें।
- पौधशाला को खरपतवार एवं कीटों से मुक्त रखें।

निष्कर्ष: वर्षा ऋतु पौध प्रसारण के लिए सबसे अनुकूल मौसम है। इस अवधि में बीज, कलम, गूटी, चश्मा चढ़ाना, ग्राफ्टिंग, सकर तथा राइजोम द्वारा प्रसारण अत्यधिक सफल रहता है। अनुकूल नमी, तापमान तथा तेज वृद्धि के कारण पौधों में जड़ बनने की क्षमता बढ़ जाती हैस जिससे स्वस्थ, गुणवत्तापूर्ण एवं अधिक जीवित रहने वाली पौध तैयार की जा सकती है। उचित तकनीकों एवं सावधानियों का पालन कर किसान एवं उद्यान प्रेमी कम समय में उत्कृष्ट पौध उत्पादन कर सकते हैं।

मेरठ में ACE ट्रैक्टर्स की नई डीलरशिप पर मेगा मैकेनिक मीट का आयोजन

68 मैकेनिकों ने लिया तकनीकी प्रशिक्षण

मेरठ। एक्शन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट लिमिटेड (ACE) की अधिकृत डीलरशिप एम/एस एंकाडोर, मेरठ में एक मेगा मैकेनिक मीट का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य स्थानीय मैकेनिकों को ACE ट्रैक्टर्स की आधुनिक तकनीक, बेहतर कार्यक्षमता एवं सर्विस प्रक्रियाओं से अवगत कराना था। इस अवसर पर 68 मैकेनिकों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान मैकेनिकों को ACE ट्रैक्टर्स की तकनीकी विशेषताओं, इंजन की कार्यप्रणाली तथा आधुनिक तकनीकों के बारे में विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया।

प्रशिक्षण के दौरान मैकेनिकों को लाइनर एवं पिस्टन की वास्तविक कार्यप्रणाली का लाइव प्रदर्शन कराया गया। साथ ही उन्हें बताया गया कि ACE ट्रैक्टर्स में कम ईंधन खपत, अधिक कार्यक्षमता, कम रखरखाव लागत तथा कम मरम्मत की आवश्यकता क्यों होती है। कंपनी के तकनीकी विशेषज्ञों ने इंजन की मजबूती, टिकाऊपन एवं बेहतर प्रदर्शन के पीछे की तकनीक को सरल एवं व्यावहारिक तरीके से

समझाया। मैकेनिकों ने प्रशिक्षण में गहरी रुचि दिखाई तथा भविष्य में भी ACE ट्रैक्टर्स के साथ तकनीकी सहयोग देने का विश्वास व्यक्त किया। कार्यक्रम के दौरान 12 मैकेनिकों ने ACE कंपनी में तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु आवेदन किया, जबकि 20 मैकेनिकों ने कंपनी के निर्माण संयंत्र का भ्रमण करने में अपनी रुचि दिखाई। कार्यक्रम के समापन पर सभी प्रतिभागी मैकेनिकों को स्मृति-चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। साथ ही उन्हें किसानों को बेहतर एवं अधिकृत सर्विस उपलब्ध कराने के लिए ACE की अधिकृत डीलरशिप एम/एस एंकाडोर के साथ नियमित संपर्क बनाए रखने का आग्रह किया गया। कार्यक्रम में ACE ट्रैक्टर्स की ओर से बिजनेस हेड श्री रविंद्र सिंह खनेजा, श्री मनीष दीक्षित, श्री मोहित कुमार त्यागी, श्री भूपेंद्र सिंह तथा उत्तर प्रदेश सर्विस प्रमुख श्री केशराज सिंह के साथ-साथ सुमित भारद्वाज उपस्थित रहे। वहीं डीलरशिप की ओर से एम/एस एंकाडोर के पार्टनर्स अजय झा, अशोक शर्मा एवं वंश शोभित तथा ACE चैंपियन भारत कुमार एवं अतुल कुमार सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में डीलरशिप के पार्टनर्स अजय झा, अशोक शर्मा एवं वंश शोभित ने सभी मैकेनिकों का आभार व्यक्त करते हुए आश्वासन दिया कि एम/एस एंकाडोर के माध्यम से किसानों एवं मैकेनिकों को उच्च गुणवत्ता वाली सर्विस, मूल स्पेयर पार्ट्स, तकनीकी सहयोग तथा त्वरित सहायता निरंतर उपलब्ध कराई जाएगी। यह मेगा मैकेनिक मीट मेरठ क्षेत्र में ACE ट्रैक्टर्स की तकनीकी जागरूकता बढ़ाने, सर्विस नेटवर्क को मजबूत करने तथा किसानों को बेहतर बिक्री पश्चात सेवायें उपलब्ध कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुई।

किसानों की समस्याओं के निराकरण की मांग

भारतीय किसान संघ ने पत्रकार वार्ता में दी जानकारी

भोपाल। भारतीय किसान संघ मध्य भारत प्रांत की मध्यप्रदेश इकाई ने किसानों के ज्वलंत मुद्दों पर सरकार का ध्यानाकर्षण किया है। भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री के साई रेड्डी ने बताया कि किसानों की समस्याओं को संघ ने सदैव सर्वोपरि रखा है।

किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए संगठन समय-समय पर संवाद, जनजागरण, ज्ञापन, धरना-प्रदर्शन एवं आंदोलन जैसे लोकतांत्रिक माध्यमों का उपयोग करता रहा है। वर्तमान कृषि परिस्थितियों एवं किसानों की समस्याओं को देखते हुए भाकिसं ने सरकार के समक्ष प्रमुख मांगें रखी हैं जिसमें ई-टोकन वितरण प्रणाली में आ रही विसंगतियों का शीघ्र निराकरण कर किसानों को समय पर खाद एवं बीज उपलब्ध कराया जाए। ई-टोकन के साथ-साथ ई पेमेंट यानी ई-भुगतान की व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाए जिससे कि पारदर्शिता बनी रहे। सैटेलाइट आधारित भूमि सीमांकन एवं हदबंदी में उत्पन्न हो रही सैटेलाइट सर्वे की समस्याओं का समाधान तकनीकी एवं व्यावहारिक समस्याओं का स्थायी समाधान किया जाये। जिन फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित किया गया है, उन्हें समर्थन मूल्य से कम पर बेचने के लिए मजबूर न होना पड़े,

इसकी प्रभावी व्यवस्था सरकार सुनिश्चित करे। कम वर्षा से क्षतिग्रस्त फसलों का तत्काल सर्वे कराकर उचित मुआवजा प्रदान किया जाए। वर्ष 2024-25 रबी एवं खरीफ फसलों के बीमा का केंद्रांश आ चुका है, प्रदेश सरकार अपना अंश मिलकर उसे रिलीज करें। जायद मूंग की पूरी उपज की समर्थन मूल्य पर जायद मूंग की शत-प्रतिशत समर्थन मूल्य पर खरीदी खरीदी सुनिश्चित की जाए तथा किसानों की इस मांग पर सरकार गंभीरता से निर्णय ले। मुख्यमंत्री से किसान संघ की मुलाकात के दौरान यह तय किया गया कि कैलारस शुगर मिल को सहकारिता के साथ शुरू किया जाएगा। जिला कलेक्टर और शेयर होल्डर किस टेक्निकल एडवाइजर और तकनीकी सलाहकारों की समिति गठित करने का निर्णय लिया है किसान संघ इसका स्वागत करता है। इस अवसर पर श्री महेश चौधरी क्षेत्रिय संगठन मंत्री, सर्वज्ञ सिंह दीवान क्षेत्रिय अध्यक्ष, श्री मनोज सक्सेना, संभागीय प्रचार प्रमुख एवं संघ के अनेक कार्यकर्ता उपथित थे।

कृषि विभाग में पदोन्नति आदेश जारी

लंबे अरसे बाद डीडीए, एडीए एवं एसएडीओ का प्रमोशन

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल। राज्य शासन ने काफी लंबे अरसे बाद विभागीय पदोन्नति समिति की बैठक के माध्यम से कर्मचारियों एवं अधिकारियों को पदोन्नत किया है। इसी क्रम में किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग ने 18 उप संचालकों को संयुक्त संचालक के पद पर पदोन्नत किया है। 87 सहायक संचालकों को उप संचालक बनाया है। कृषि विभाग ने 109 वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी संवर्ग के कर्मचारियों को सहायक संचालक के पद पर पदोन्नत किया है। पदोन्नत हुये अधिकारियों की सूची निम्नानुसार है।

उप संचालक से संयुक्त संचालक बने अधिकारी

मनोहर सिंह देवके, राजेश चतुर्वेदी, जितेन्द्र कुमार सिंह, जितेन्द्र सिंह परिहार, उम्मेद सिंह तोमर, जोधाराम पंड्राम, रामलाल जामरे, डॉ. सुशील कुमार निगम, आलोक कुमार मीणा, रामसेवक शाक्यवार, केशव सिंह खपेडिया, कमल कुमार जैन, आनन्द कुमार बड़ोनिया, डॉ. अजय कुमार कौशल, बंडू सिंह जमरा, शोभाराम चौहान, संजय दोशी, रामपाल सिंह नायक को उप संचालक से संयुक्त संचालक के पद पर पदोन्नत किया गया हैं।

सहायक संचालक से उप संचालक बने अधिकारी

सरनाम सिंह, ए.के. बिसेन, गजराज सिंह गोरख, लक्ष्मीनारायण चौरसिया, ग्यारसीलाल अहिरवार, मुकेश कुमार प्रजापति, उमेश कुमार कटहरे, हरि प्रसाद भारती, फूलसिंह मालवीय, ज्ञानेन्द्र कुमार पचेरिया, जगदीश नरवरिया, खैरसिंह केन, सुरेन्द्र कुमार परहाते, रवि कुमार आम्रवंशी, राम प्रसाद झारिया, कैलाश मगर, गौरीशंकर बेले, संजीव कुमार शाक्य, भगवान सिंह अर्गल, हनुमंत राव प्रभाकर, त्रिभुवन भारती,श्रीमती नविता उरकुड़े वास्तव, प्रताप सिंह निगवाल, शांतिलाल पंवार, सचिन राजीव दास, परमानंद डाबर, के.एस. झनिया, रणजीत सिंह पटेल, श्रीमती अरुणिमा सेन श्रीमती रचना शर्मा, अनंत बिहारी सडैया, श्याम बहादुर सिंह, नरेश कुमार परमार, रामशंकर जाट, राजकुमार सिंह, डॉ. दिनेश कुमार सिंह, गोपेश पाठक, डॉ. अनिल कुमार मिश्रा, उपेन्द्र कुमार शुक्ला, ओमप्रकाश तिवारी, मनोज रघुवंशी, डॉ. आशुतोष पाण्डेय,डॉ. रविकांत सिंह, अजय कुमार परियानी, पियूष सोलंकी, श्रीमती प्रतिभा गौर, राजेन्द्र कुमार द्विवेदी, कमलेन्द्र सिंह चौहान, डॉ. राजेश सिंह चौहान, डॉ. अनुराग पटेल, डॉ. सुरेश कुमार, डॉ. श्रीमती अनंता दीवान, डॉ. रामनाथ पटेल, राजेन्द्र प्रसाद परमार, डॉ. श्रीमती इंदिरा त्रिपाठी, डॉ. रामवीर सिंह राजपूत, भानुप्रताप सिंह, विलास राव पाटिल,श्रीमती कीर्ति वर्मा, श्रीमती नम्रता गुरनानी,श्रीमती रश्मि लाभांते (प्रचंड), दिनेश मण्डलोई, मानसिंह ठाकुर, कु. रजनी चौहान, हीरा सिंह चौहान, श्रीमती अनीता धाकड, सुश्री भावना चतुर्वेदी, अंबाराम मेडा, संतोष सिंह मौर्य, ओंकार सिंह बर्मन, प्रकाश ठाकुर, प्यार सिंह चौहान, निर्भय सिंह पटैल, प्रियंका चंदेल, जवाहरलाल कास्दे, मोरिस नाथ, यतीन कुमार मेहता, लाल सिंह चारेल, डॉ. प्रेम सिंह, सचिन जैन, भानुप्रताप शर्मा, नितेश कुमार यादव, संजय कुमार पाठक, संदीप कुमार यादव, सुरेन्द्र अमरुते, धीरज ठाकुर, अमित सिंह सहायक संचालक से उप संचालक पद पर पदोन्नत किये गये है।

वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी से सहायक संचालक पद पर पदोन्नत अधिकारी

शिवराम सिंह कश्यप बृजमोहन , सोलंकीजी.एस. चौधरी टी.आर. परिहार, हरिशचंद्र डेहरिया, दिनेश कुमार मेहरा, गोरेलाल वास्केल, बलीराम अठ्या, गजराज सिंह मण्डलेकर, योगेन्द्र कुमार गुजरे, नरेश कुमार आरसे, कैलाश धवलकर, जी.पी. बेन रावेन्द्र कुमार बागरी, रामदास सिलावट, पन्नालाल प्रजापति, मोहनलाल जाटव, मधुकर तायवाडे, बलवंत सिंह राज, एस. के. मेहरा, श्रीमती अर्चना त्यागी, श्रीमती संध्या नागराले, श्रीमती भारती पठारिया (मेहरा), श्रीमति भगवती चौहान, श्रीमति भावना हंसारी (विश्नार), सुआकांक्षा शिवकर, श्रीमती आशा पाटिल, एम एल वर्मा, निरंजन सिंह गुर्जर, सुनील कुमार तिवारी, रामसेवक चौधरी, श्रीमती किरण भलावी, रवीन्द्र सिंह कुशवाह, राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव, दीपक कुमार नेमा, राकेश कुमार शर्मा, सालिगराम गुप्ता, संजय कुमार पाठक, दिनेश कुमार साहू, विनोद चौधरी, एस एस केलवा, अशोक कुमार निगम,चन्द्रमोहन अवस्थी, ऋषभ कुमार जैन,कु. श्रद्धा डेहरिया, रमेश सिंह भदौरिया, एस. के. सोनी, योगेन्द्र शर्मा, भरत कुमार दुबे, संजीव कुमार चतुर्वेदी, के. के. ठाकुर, जयपाल सिंह राठौर, विजय कुमार त्रिपाठी, रामनरेश त्रिपाठी, बृजेन्द्र कुमार वुधोलिया, प्रदीप कुमार शर्मा, जगदेव सिंह चोहान, ब्रजेन्द्र सिंह सेंगर, रवीन्द्र कुमार गौतम, अवधेश कुमार विसोरिया, सुबोध कुमार पाठक, ओमवीर सिंह भदौरिया, धनपाल सिंह तोमर, ब्रजमोहन पालीवाल, रवीन्द्र सिंह परिहार, नाथूराम यादव, राजनायक सिंह परिहार, दिलावर सिंह कौरव, भानुप्रताप सिंह घुरैया, भवानी प्रसाद कुशवाह, अशोक सिंह कौरव, बी. के.एस. कुशवाह, एस.के. शर्मा, एस. के. सिंह चौहान, पंकज कुमार श्रीवास्तव, धनंजय शर्मा, शेख अजीज, ब्रजेश प्रताप सिंह, एस के ब्यौहार, भारत सिंह देवडा, संतोष कुमार पाटीदार, राजेश धारे, श्रद्धा काग, श्रीमती विभा सिंह तोमर, श्रीमती संगीता श्रीवास्तव, श्रीमती वास्कर गिरी गौस्वामी, श्रीमती सीमा सिंह, श्रीमती सविता श्रीवास्तव, श्रीमती उषा पचोरी, श्रीमती मीना सिलाकारी, श्रीमती रश्मि परसाई, श्रीमती प्रेमलता वर्मा, श्रीमती विनीता सिंह, श्रीमती पूजा मिश्रा, श्रीमती अल्का खरे, श्रीमती कविता कौरव, श्रीमती नीति मोदी, श्रीमती ममता कुशवाह, श्रीमती सीमा सराफ, श्रीमती रश्मि सुजित, श्रीमती अल्पना दुबे, श्रीमती कनकलता श्रीवास्तव, श्रीमती अंजना जादौन, श्रीमती अर्चना साहू, श्रीमती प्रतिभा तिवारी, श्रीमती प्रीति कश्यप (लौवंशी), श्रीमती पूनम राजे, अशोक ठाकुर, गोपाल साहू वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी से सहायक संचालक के पद पर पदोन्नत किये गये है। कृषि विभाग के पदोन्नत हुए अधिकारियों की शीघ्र नवीन पदस्थापना की जायेगी।

राशी सीड्स कपास कृषि के लिए मील का पत्थर

इंदौर। 'विकसित भारत 2047 के लिए कृषि की पुनर्कल्पना' की प्रेरक थीम के तहत भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का 98वां स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर राशी सीड्स के एमडी श्री राजेन्द्रन रामासामी ने बोलगार्ड द्वुद्व-प्रतिरोधी पिंक बोलवर्म (गुलाबी सुंडी) से निपटने के लिए एक नए क्रिस्टल टॉक्सिन जीन तकनीक के लाइसेंस के लिये आईसीएआर-गन्ना प्रजनन संस्थान के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये।

इस दौरान रामासामी ने कहा कि यह सहयोग भारतीय कपास किसानों के लिए अनुसंधान-आधारित, मूल्य-आधारित समाधान प्रदान करने वाली अग्रणी भारतीय बीज कंपनी के रूप में राशी सीड्स की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। घरेलू स्तर पर खोजी गई तकनीकों की एक नई पीढ़ी को आगे बढ़ाकर, हम अधिक लचीले कपास उत्पादन, टिकाऊ कीट प्रबंधन और भारत के कपास कृषि के लिए एक मजबूत, आत्मनिर्भर भविष्य को सक्षम बना रहे हैं।

कृषि सम्मेलन में इफको ने लगाया प्रदर्शनी स्टॉल

बहादुरपुर (अशोकनगर)। कृषि विभाग द्वारा कृषक कल्याण वर्ष-2026 के अंतर्गत कृषि उपज मंडी, बहादुरपुर (विकासखंड मुंगावली, जिला अशोकनगर) में आयोजित कृषि सम्मेलन में इफको द्वारा आकर्षक प्रदर्शनी एवं जागरूकता स्टॉल लगाया गया। स्टॉल पर किसानों को इफको के नैनो यूरिया, नैनो डीएपी, सागरिका, जैव उर्वरक एवं बायोडीकंपोजर के वैज्ञानिक एवं संतुलित उपयोग, उनके लाभ तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में उनकी भूमिका की जानकारी दी गई। साथ ही किसानों को उत्पाद संबंधी साहित्य भी वितरित किया गया।

इस अवसर पर केंद्रीय संचार एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने इफको स्टॉल का अवलोकन किया। उन्होंने स्टॉल पर प्रदर्शित ड्रोन तकनीक एवं इफको के नैनो उर्वरकों की जानकारी प्राप्त की तथा कृषि में आधुनिक तकनीकों एवं नवाचारों को बढ़ावा देने के लिए इफको के प्रयासों की सराहना की।

एचडीएफसी इर्गो ने रबी सीजन के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना लागू की

HDFC ERGO

नई दिल्ली। भारत में निजी क्षेत्र की अग्रणी जनरल इंश्योरेंस कंपनी, एचडीएफसी इर्गो जनरल इंश्योरेंस कंपनी को मध्य प्रदेश सरकार ने रबी, 2026 सीजन के लिए आलीराजपुर, बड़वानी, बुरहानपुर, धार, झाबुआ, खंडवा (पूर्वी निमाड़) और खरगोन जिलों में ऋणी और गैर-ऋणी किसानों के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना लागू करने के लिए अधिकृत किया है। किसान के खाते से प्रीमियम कटने की अंतिम तिथि 31 जुलाई 2026 है।

पीएमएफबीवाई योजना में किसानों को सूखा, बाढ़, अकाल, लैंडस्लाइड, चक्रवात, तूफान, तूफानी बारिश, सैलाब, कीटों, बीमारियों और अन्य बाहरी खतरों के कारण फसल को होने वाले नुकसान से बीमा की सुरक्षा मिलती है। फसल के नुकसान का आकलन करने के लिए राज्य सरकार इस योजना के लिए अधिसूचित क्षेत्रों में अधिसूचित फसलों पर फसल कटाई प्रयोग (सीसीई) की योजना बनाकर उसका संचालन करेगी। यदि सीसीई में पैदावार के आंकड़े कम पाए गए तो माना जाएगा कि किसान को फसल का नुकसान हुआ है और इस नुकसान के लिए उसे क्लेम दिया जाएगा।

इस योजना के अंतर्गत फसल चक्र के हर चरण के लिए बीमा कवर मिलेगा, जिसमें बुआई से पहले, कटाई और कटाई के बाद के जोखिम भी शामिल हैं। पीएमएफबीवाई योजना के अंतर्गत आने वाले सभी उत्पाद मध्य प्रदेश सरकार के कृषि विभाग से अनुमोदित हैं।

इफको उत्पादों को किसानों तक पहुंचाने का आह्वान

कृषि अधिकारियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

ग्वालियर। इफको द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र, ग्वालियर में कृषि अधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आर.एस. शाक्यवार, संयुक्त संचालक कृषि थे। कार्यक्रम में भानुप्रताप शर्मा (उप संचालक कृषि), डॉ. डी.के. सोलंकी (राज्य विपणन प्रबंधक, इफको भोपाल), डॉ. एस.एस. कुशवाह (प्रमुख एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र, ग्वालियर) तथा आर.के. महोलिया (उप क्षेत्र प्रबंधक, इफको ग्वालियर) विशेष रूप से उपस्थित रहे। प्रशिक्षण कार्यक्रम में लगभग 50 कृषि अधिकारियों ने सहभागिता की।

इस दौरान डॉ. कुशवाह ने गोबर की खाद, हरी खाद एवं संतुलित उर्वरक उपयोग के माध्यम से समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन एवं मृदा स्वास्थ्य संरक्षण पर जोर दिया। डॉ. सोलंकी ने इफको के नैनो उर्वरकों, जैव उर्वरकों, बायोडीकंपोजर, सागरिका, नेचुरल पोटाश, वाटर सॉल्यूबल उर्वरकों एवं सेकेंडरी न्यूट्रिएंट्स के लाभ बताते हुए कृषि अधिकारियों से इन तकनीकों को किसानों तक प्रदर्शन, प्रशिक्षण एवं किसान सभाओं के माध्यम से पहुँचाने का आह्वान किया।

उप संचालक कृषि भानुप्रताप शर्मा ने फसल विविधीकरण अपनाने तथा दलहनी एवं तिलहनी फसलों को फसल चक्र में शामिल करने पर जोर दिया। मुख्य अतिथि श्री शाक्यवार ने कृषि विभाग की योजनाओं में इफको के नैनो एवं जैव उर्वरकों के व्यापक उपयोग पर बल देते हुए कृषि अधिकारियों से किसानों के बीच इन आधुनिक तकनीकों का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करने का आग्रह किया। कार्यक्रम में संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन, मृदा स्वास्थ्य संरक्षण एवं टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देने पर विशेष जोर दिया गया।

पैराक्वाट डाइक्लोराइड प्रतिबंधित

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने खरपतवारनाशी पैराक्वाट डाइक्लोराइड पर तत्काल प्रभाव से प्रतिबंध लगाने के आदेश जारी कर दिया है। इस पर पिछले कई महीने से चर्चा चल रही थी। यह प्रतिबंध मानव स्वास्थ्य पर इसके प्रतिकूल असर, पॉइजनिंग की घटनाओं और किसी खास एंटीडोट की अनुपस्थिति को देखते हुए लगाया गया है। सरकारी अधिसूचना में कहा गया है कि पौधों की रक्षा करने वाले इस खरपतवार नाशक को विभिन्न वजहों से 70 से ज्यादा देशों में प्रतिबंधित किया जा चुका है। इसमें प्रमुख वजह मनुष्यों और पशुओं के स्वास्थ्य पर पड़ने वाला इसका प्रतिकूल असर है।

हितधारकों से मसौदा प्रतिबंध आदेश पर 13 अगस्त तक अपनी आपत्तियां भेजने को कहा गया है। पैराक्वाट डाइक्लोराइड एक नॉन सलेक्टिव खरपतवारनाशी है। इसे कृषि और गैर कृषि क्षेत्रों में अवांछित खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए पंजीकृत किया गया है। यह विश्व स्तर पर और भारत में आधुनिक खरपतवार प्रबंधन प्रणालियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में पैराक्वाट डाइक्लोराइड (24 प्रतिशत एसएल या घुलनशील तरल) सबसे व्यापक रूप से बिकने वाला खरपतवार नाशक है। चाय, कॉफी, कपास, धान, गन्ना, मक्का, रबर, अंगूर, गेहूं और अन्य फसलों में इसका व्यापक उपयोग किया जाता है। पैराक्वाट डाइक्लोराइड के निर्माण, भंडारण एवं बिक्री पर तत्काल प्रभाव से प्रतिबंध पूरे देश में लगाया गया है।

किसानों के बीच लोकप्रिय प्रताप बीज भंडार

(उमाशंकर तिवारी)

जानिए अपने क्षेत्र के कृषि आदान विक्रेता को

जबलपुर। सब्जी बीज के विक्रेता प्रताप बीज भंडार के प्रो. प्रभात पटेल द्वारा महिला मार्केट वल्देबबाग स्थित हाइब्रिड सब्जी बीज की दुकान शुरू की गई है। सब्जियों की उन्नत किस्म किसानों को उपलब्ध कराने में काफी मददगार साबित हो रहे हैं। इस संस्था द्वारा किसानों को विगत 16 वर्षों से लगातार हाइब्रिड सब्जी बीज उपलब्ध कराया जा रहा है। श्री पटेल ने बताया कि हाइब्रिड सब्जी बीज लगाने में काफी फायदेमंद साबित हो रही है। हाईब्रिड सब्जी बीज लगाने में कोई बीमारी का प्रकोप नहीं होता। यदि इस तरह की घटनाएं होती तो कंपनी के सेल्स अधिकारियों के माध्यम से किसान के खेत पर जाकर उनका निदान कराना पहली प्राथमिकता है। सरल स्वभाव के धनी श्री पटेल हमेशा किसानों को समझाईश देते हैं कि उच्च क्वालिटी का सब्जी बीज का प्रयोग करें। ताकि फसल उत्पादन में अधिक से अधिक लाभ कमाया जा सके। श्री पटेल ने बताया कि इस संस्था द्वारा जो भी बीज किसानों को दिया जाता हैं वह गांरटी के साथ उपलब्ध कराते हैं। इसी कारण जबलपुर के आस-पास के क्षेत्र से लगभग 2000 से अधिक किसानों का सीधा संपर्क है। श्री पटेल का कहना है कि पेस्टीसाइड्स का उपयोग कम मात्रा में करते हुये ज्यादा से ज्यादा जैविक खाद का उपयोग करने से फसल उत्पादन में बढ़ोत्तरी की जा सकती है एवं शरीर में लगने वाली बीमारियों से भी निजात मिल सकती है।

पशुओं में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के उपाय

• डॉ. अशोक सिंह
पूर्व प्राध्यापक एवं प्रमुख
पशु चिकित्सा एवं पशुपालन
महाविद्यालय, महू (म.प्र.)

आज दुग्ध उत्पादन एवं दुग्ध की माग में बड़ा भारी अंतर आ गया है। पहले सभी के पास गाय होने से अपने लिए सब दूध का उत्पादन कर लेते थे लेकिन अब तेजी से बढ़ती प्रतियोगिता के दौर में लोग पशुपालन छोड़कर दूसरे व्यवसाय में जुड़ रहे हैं।

जिससे आर्थिक सुदृढ़ता तो आ रही लेकिन स्वास्थ में तेजी से गिरावट आ रही जिस गिरावट को कम करने के लिए व्यक्ति स्वस्थ पोषक आहार लेना चाहता है। जिससे दुग्ध एवं उसके उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है। इस मांग के अंतर को कम करने के लिए कुछ समाजद्रोही, कानूनद्रोही, लालची लोग कृत्रिम दूध एवं उसके उत्पाद प्रबंधन एवं बिक्री में जुड़ गए हैं जिससे वो छोटे से लाभ के लिए समाज को जहर का सेवन करा रहे हैं। इस जहर सेवन से कुपरिणाम आ रहे। व्यक्ति स्वस्थ होने के बजाय अस्वस्थ हो रहे हैं। मिलावट खोरों के भय को बता कर दुग्ध उत्पादक बिचौलिए दो गुने दामों में दूध बेंचकर मोटी रकम कमा रहे एवं किसान भाइयों को दूध उत्पादन का सही दाम भी नहीं दे रहे। इससे सकल महंगाई दर भी बढ़ रही है।

दुग्ध उत्पादन बढ़ने से किसान भाइयों को क्या लाभ मिलेगा?

दुग्ध उत्पादन बढ़ाने से किसान भाइयों को आर्थिक सुदृड़ता प्राप्त होगी एवं दुग्ध उपभोक्ताओं को शुद्ध दूध एवं दूध के उत्पाद प्राप्त हो सकेंगे जिससे की मनुष्य एवं समाज में स्वास्थ लाभ प्राप्त होगा। स्वस्थ समाज में तेजी से विकास की विचारधारा का प्रवाह होगा।

दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के प्रमुख कारक ये है:-

- **क उच्च अनुवांशिकीय का पशु-पशु आहार प्रबंधन कपशु स्वास्थ प्रबंधन**
- **कपशु सामान्य प्रबंधन:** उच्च अनुवांसिकी के पशु खरीदकर या घर में सघन चयन प्रक्रिया या कृत्रिम गर्भाधान से संकर नस्ल तैयार कर उच्च अनुवांशिकी वाला पशु प्राप्त किया जा सकता है। उच्च अनुवांशिकी वाले पशु की दुग्ध उत्पादन क्षमता पहले ही ज्यादा होती है और यदि उसे संतुलित आहार प्रदान कर दिया जाए तो दुग्ध उत्पादन तेजी से बढ़ाया जा सकता है।
- **संतुलित पशु आहार प्रबंध के लाभ -** संतुलित आहार में आवश्यक पदार्थ प्रोटीन, ऊर्जा, वसा एवं खनिज लवण निश्चित मात्रा में मिश्रित रहते हैं। जिससे पशु पालक निकट परिणाम के रूप में उच्च दुग्ध उत्पादन प्राप्त कर सकता है। पशु में बांझपन, जेर अॅटकना, जड़ गिरना या बाहर आ जाना, बच्चा फॅस जाना एवं अन्य रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ जाने से पशु स्वास्थ में तेजी से वृद्धि होती है। जिससे की पशु स्वास्थ समस्या से निदान के कारण आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। इन सभी क्रियाकलाप से पशु की बाजारू कीमत में भी गिरावट कम दर्ज की जाती है एवं पशु पालन लाभ का धंधा सिद्ध होता रहता है।
- **संतुलित आहार न देने के कारण हानियां-** पशु में विकास दर एवं प्रजनन दर घट जाती है। जिस भैंस से हर 14-16 माह में बच्चा प्राप्त किया जा सकता है उसमें प्रजनन दर में कमी के कारण हर तीसरे वर्ष ही उसके जीवन काल में बच्चा प्राप्त हो पाता है जिससे दोहरा नुकसान होता है। दोहरा नुकसान ऐसे कि जिस पशु से 7 से 8 बच्चे प्राप्त हो सकते थे उससे अब सिर्फ 4-5 प्राप्त होगें और उसकी सेवा काल में ज्यादा भोजन व्यवस्था और कम उत्पाद न प्राप्त होगा। संतुलित आहार न देने से कई बीमारियां जैसे दुग्ध ज्वर, यौवनावस्था में देरी, उत्पादक जीवन काल का छोटा होना और सबके द्वारा पशु पालक को भारी आर्थिक संकट से गुजरना पड़ता है।
- **संतुलित आहार दिन भर में कितना और कैसा-** एक 400 किलोग्राम की गाय को 5 किलो भूसा 20 किलो हरी घास एवं 1 किलोग्राम दाना दिन भर में 2-3 बार में दिया जाना चाहिए।
- **दानें का संतुलित मिश्रण बनाने की तरकीब-** 100 किलो दाना बनाने के लिए 65 किलो अनाज को दलिया के रूप में 32 किलो मूंगफली, कपास्या, सरसो या किसी अन्य की खली के साथ मिलाकर 2 किलो नमक एवं 1 किलो खनिज लवण मिलाकर बनाया जा सकता है। अनाज का तात्पर्य उन दानों से है जो कि मनुष्य के उपयोग के नहीं लेकिन पशु के उपयोग के हो सकते हैं का किया जाना चाहिए। यह संतुलित दाना भैंस में प्रति 2 किलो दूध उत्पादन पर 1 किलो एवं गाय में प्रति 2.5 किलो दूध उत्पादन पर 1 किलो दिया जाना उचित होगा। हरा चारा उत्पाादन कार्यक्रम किया जाना लाभदायी पशु पालन के लिए अति आवश्यक है। बरसात के मौसम में मक्का एवं जौ उगाना चाहिए एवं ठंडी एवं गर्मी के मौसम में बरसीम चारे का अच्छा विकल्प हो सकती है। एजोला नामक हरी शहवाल भी हरा चारा के विकल्प के रूप में उपयोग की जा सकती है।
- **पशु स्वास्थ प्रबंधन कैसे करें-** पशु स्वास्थ प्रबंधन में टीकाकरण का विशेष स्थान है। पशुओं में जो बीमारियाँ प्राय: पाई जाती हैं उनका टीकाकरण बीमारी के प्रकोप शुरू होने के पहले कर दिया जाना चाहिए। पशु में बीमारी आ जाने के बाद दोहरी मार पशु पालक को सहनी पड़ती है। एक चिकित्सा का सीधा खर्च एवं दुग्ध उत्पादन घट जाने से आमदनी में घट जाने से दूसरा नुकसान। दुधारू पशुओं की प्रमुख बीमारी है लगड़ा बुखार, तिलिया, गलाघोट, खुर पका, मुह पका जिसे बाद भी कहते हैं इत्यिादि हैं इनका विशेष प्रकार का टीकाकरण वर्ष भर में किया जाता है। लगड़ा बुखार, तिलिया, एवं गलघोटू का टीकाकरण बरसात के मौसम में किया जाता है एवं बाद बीमारी का टीका सर्दी से पहले लगाया जाता है।
- **दुधारू पशुओं का सामान्य प्रबंधन-** दुधारू पशुओं को एक व्यवस्थित आवास प्रदाय किया जाना चाहिए जिसमें साफ-सफाई, समुचित प्रकाश व्यवस्था एवं शुद्ध हवा का संचरण हो। पशु को कुछ समय स्वच्छ घूमने के लिए खुले स्थान की व्यवस्था होनी चाहिए जो कि चारागाह में प्रदाय की जा सकती है। इन सभी चीजों के प्रदाय करने से पशु के शरीर का तनाव कम होगा और तनाव कम होने से उत्पादन 10-20 प्रतिशत बढ़ जाएगा। साफ सफाई से बीमारी भी कम होगी तो उत्पादन बढ़ेगा। आवास व्यवस्था से अति ठंड, अति गर्मी से दुधारू पशु के शरीर में पड़ने वाले दुष्परिणाम से भी बचाया जा सकता है। आवास की साफ-सफाई चूना छिड़क कर भी की जानी चाहिए जिससे बीमारियों के जीवाणु मर जाते हैं। पानी साफ दिया जाना चाहिए। पानी साफ करने के लिए लाल दवा (पोटेशियम परमैंगनेट का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- **दुग्ध उत्पादन बढ़ाने में प्रमुख बाधाएं क्या-क्या हैं।**

दुग्ध उत्पादन बढाने में प्रमुख बाधा है उसके बाजार में सही मूल्य मिलना। किसान दूध उत्पादित तो कर लेता है लेकिन व्यवस्थित वितरण एवं बिक्री व्यवस्था न होने से आमदनी नहीं कमा पाता इसलिए कुछ दिन बाद दुग्ध उत्पादन को छोड़कर अन्य धंधा अपना लेता है, जिससे दुग्ध उत्पादन घट जाता है। दुग्ध उत्पादन का रेट/कीमत निर्धारण एवं विचौलिया लाभ कम करने के लिए पशु पालकों को दुग्ध उत्पादक समितियों का गठन किया जाना चाहिए।

दुग्ध उत्पादक समितियों का कार्य निर्धारित है एवं यदि समितियां अपना कार्य कार्यपर्णता से करेंगी तो निश्चित ही दुग्ध उत्पादक लाभानवित होगें एवं दुग्ध उत्पादन बढ़ेगा।

नीमच में चौथी स्मार्ट किसान बैठक संपन्न

नीमच। किसानों को आधुनिक एवं वैज्ञानिक खेती की तकनीकों से जोड़ने के उद्देश्य से नीमच क्षेत्र में चौथी जेयू स्मार्ट किसान बैठक का सफल आयोजन किया गया। बैठक में नीमच क्षेत्र के अनेक प्रगतिशील एवं स्मार्ट किसानों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन और समन्वय टीम नीमच द्वारा प्रभावी ढंग से किया गया।

बैठक के दौरान रमेश सिंह, वरिष्ठ क्षेत्रीय अधिकारी, पंकज शर्मा, मार्केटिंग मैनेजर, सुरेन्द्र सिंह, ट्रेरिटरी मैनेजर उपस्थित थे। किसानों के साथ आधुनिक कृषि पद्धतियों, उन्नत फसल प्रबंधन, नवीन तकनीकों के उपयोग तथा खेती में उत्पादकता और लाभ बढ़ाने के विभिन्न उपायों पर विस्तार से चर्चा की गई। विशेषज्ञों ने किसानों को वैज्ञानिक सोच अपनाने, नई कृषि तकनीकों को व्यवहार में लाने तथा बेहतर उत्पादन के लिए आधुनिक संसाधनों का उपयोग करने की जानकारी दी।

कार्यक्रम में किसानों ने भी अपने अनुभव साझा किए और खेती से जुड़ी विभिन्न समस्याओं एवं उनके समाधान पर खुलकर चर्चा की। किसानों ने स्मार्ट खेती की इस पहल का स्वागत करते हुए इसे समय की आवश्यकता बताया। प्रतिभागियों का उत्साह और सकारात्मक सहभागिता कार्यक्रम की प्रमुख उपलब्धि रही।

आयोजकों ने बताया कि किसानों से मिले उत्साहजनक सहयोग से यह स्पष्ट है कि क्षेत्र में स्मार्ट खेती को लेकर जागरूकता बढ़ रही है। भविष्य में भी इस प्रकार की बैठकों का आयोजन कर अधिक से अधिक किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों से जोड़ने का प्रयास किया जाएगा, ताकि खेती को अधिक लाभकारी, टिकाऊ और तकनीक आधारित बनाया जा सके।

टमाटर एवं मिर्च की उन्नत खेती पर किसान संगोष्ठी

शिवपुरी। कृषि विज्ञान केंद्र शिवपुरी में दयाल फर्टिलाइजर प्राइवेट लिमिटेड (दयाल ग्रुप) एवं कृषि विज्ञान केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में टमाटर एवं मिर्च की उन्नत खेती पर किसान संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में केवीके के प्रमुख डॉ. पुनीत कुमार एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. प्रशांत गुप्ता उपस्थित रहे।

उच्च पोषक दक्षता वाले आहार की डिजाइन एवं विकास के सिद्धांत

● डॉ. आकांक्षा पाण्डेय,
वैज्ञानिक, आहार एवं पोषण प्रबंधन
कृषि विज्ञान केन्द्र, गोविन्दनगर,
नर्मदापुरम (म.प्र.)

स्वस्थ जीवन के लिए केवल पेट भरने वाला भोजन पर्याप्त नहीं है बल्कि ऐसा भोजन आवश्यक है जो शरीर को पर्याप्त ऊर्जा के साथ-साथ प्रोटीन, विटामिन, खनिज, आहार रेशा (फाइबर), आवश्यक वसा एवं अन्य जैव सक्रिय घटकों की पर्याप्त मात्रा भी प्रदान करे। ऐसा भोजन जो कम मात्रा में अधिक पोषक तत्व उपलब्ध कराए, उच्च पोषक दक्षता वाला आहार कहलाता है।

वर्तमान समय में भारत कुपोषण, सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी, एनीमिया तथा जीवनशैली संबंधी रोगों जैसी दोहरी पोषण चुनौती का सामना कर रहा है। ऐसे में स्थानीय एवं मौसमी खाद्य पदार्थों पर आधारित उच्च पोषक दक्षता वाले आहार का विकास समय की आवश्यकता है। कृषि विज्ञान केंद्रों की महत्वपूर्ण भूमिका किसानों, महिलाओं, स्वयं सहायता समूहों तथा ग्रामीण युवाओं को ऐसे पौष्टिक, कम लागत एवं मूल्यवर्धित खाद्य उत्पादों के निर्माण और उपयोग के लिए प्रशिक्षित करना है।

उच्च पोषक दक्षता वाले आहार की अवधारणा

उच्च पोषक दक्षता वाले आहार से आशय ऐसे भोजन से है जिसमें प्रति इकाई ऊर्जा (कैलोरी) अधिक मात्रा में आवश्यक पोषक तत्व उपलब्ध हों। ऐसे आहार में ऊर्जा के साथ-साथ प्रोटीन, विटामिन, खनिज, आहार रेशा तथा एंटीऑक्सीडेंट पर्याप्त मात्रा में उपस्थित रहते हैं। इसका उद्देश्य कम लागत में अधिकतम पोषण उपलब्ध कराना तथा सभी आयु वर्गों की पोषण आवश्यकताओं की पूर्ति करना है।

उच्च पोषक दक्षता वाले आहार के डिजाइन एवं विकास के सिद्धांत

- **संतुलित एवं विविधतापूर्ण आहार:** भोजन में सभी खाद्य समूहों- अनाज, दालें, दूध एवं दुग्ध उत्पाद, फल, हरी पत्तेदार सब्जियां, अन्य सब्जियां, मेवे एवं बीज का संतुलित समावेश होना चाहिए।
- **स्थानीय एवं मौसमी खाद्य पदार्थों का उपयोग:** स्थानीय स्तर पर उपलब्ध अनाज, दालें, मोटे अनाज, फल एवं सब्जियां अधिक ताजी, पौष्टिक, किफायती तथा पर्यावरण के अनुकूल होती हैं।
- **खाद्य पदार्थों का उचित संयोजन:** अनाज एवं दालों का संयोजन (जैसे दाल-चावल, खिचड़ी, रोटी-दाल) प्रोटीन की गुणवत्ता बढ़ाता है। आयरन युक्त भोजन के साथ विटामिन सी युक्त खाद्य पदार्थ लेने से आयरन का अवशोषण बढ़ता है।
- **कम लागत में अधिक पोषण:** चना, मूंग, मसूर, सोयाबीन, मूंगफली, तिल, अलसी, रागी, बाजरा, ज्वार तथा हरी पत्तेदार सब्जियां कम लागत में उत्कृष्ट पोषण प्रदान करती हैं।
- **खाद्य सुरक्षा एवं स्वच्छता:** भोजन तैयार करने, संग्रहित करने एवं परोसने में स्वच्छता का पालन करना आवश्यक है ताकि खाद्य जनित रोगों से बचाव हो सके।

- **पोषक तत्वों का संरक्षण:** भोजन को आवश्यकता से अधिक न पकाएं। कम पानी में पकाना, भाप में पकाना तथा ढककर पकाने जैसी विधियां पोषक तत्वों की हानि कम करती हैं।
- **लक्ष्य समूह के अनुसार आहार डिजाइन:** बच्चों, किशोरियों, गर्भवती एवं धात्री महिलाओं, वृद्धजनों तथा श्रमिकों की आवश्यकताओं के अनुसार आहार में परिवर्तन किया जाना चाहिए।
- **उच्च पोषक दक्षता बढ़ाने की प्रमुख तकनीकें:** अंकुरण विटामिन-सी, फोलेट एवं खनिजों की उपलब्धता बढ़ती है तथा पाचन क्षमता में सुधार होताहै।
- **किण्वन:** इडली, ढोकला, कांजी जैसे खाद्य पदार्थों में पोषक तत्वों की जैव उपलब्धता एवं पाचन क्षमता बढ़ती है।
- **खाद्य संयोजन:** अनाज एवं दालों का संयोजन आवश्यक अमीनो अम्लों का संतुलन सुधारता है।
- **पोषण संवर्धन:** आयरन, फोलिक अम्ल, विटामिन-ए, विटामिन-डी एवं आयोडीन जैसे सूक्ष्म पोषक तत्वों का संवर्धन पोषण स्थिति में सुधार करता है।
- **उचित पाक विधियां:** कम तेल, कम पानी तथा कम समय में भोजन पकाने से पोषक तत्व सुरक्षित रहते हैं।
- **निष्कर्ष:** उच्च पोषक दक्षता वाले आहार का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को कम लागत में अधिकतम पोषण उपलब्ध कराना है। स्थानीय एवं मौसमी खाद्य पदार्थों का वैज्ञानिक चयन, संतुलित संयोजन, पोषक तत्वों का संरक्षण तथा मूल्यवर्धित पौष्टिक व्यंजनों का नियमित उपयोग परिवार की पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

उच्च पोषक दक्षता वाले मूल्यवर्धित व्यंजन

मूल्यवर्धित व्यंजन	प्रमुख सामग्री	प्रमुख पोषक तत्व	प्रमुख पोषण लाभ
अंकुरित मूंग-चना सलाद	अंकुरित मूंग, चना, टमाटर, खीरा	प्रोटीन, आयरन, विटामिन-सी, फाइबर	एनीमिया की रोकथाम एवं रोग प्रतिरोधक में वृद्धि
मल्टीग्रेन न्यूट्री खिचड़ी	बाजरा, ज्वार, मूंग दाल, मौसमी सब्जियां	प्रोटीन, जटिल कार्बोहाइड्रेट, फाइबर	संतुलित एवं सुपाच्य भोजन
मूंग दाल-पालक चीला	मूंग दाल, पालक	प्रोटीन, आयरन, फोलेट	बच्चों एवं किशोरियों के लिए उपयुक्त
सोया-मिक्स वेज पराठा	गेहूं, सोया ग्रेन्यूल्स, मिश्रित सब्जियाँ	उच्च प्रोटीन, कैल्शियम, फाइबर	वृद्धि एवं मांसपेशियों के विकास में सहायक
रागी (मंडुआ) पोरिज	रागी, दूध, गुड़	कैल्शिय, आयरन	बच्चों एवं वृद्धजनों के लिए लाभकारी
तिल-गुड़-चना लड्डू	तिल, भुना चना, गुड़	आयरन, कैल्शियम, ऊर्जा	किशोरियों एवं गर्भवती महिलाओं के लिए उपयोगी
न्यूट्रीमिक्स पाउडर	गेहूँ, चना, सोयाबीन, मूंग	प्रोटीन, ऊर्जा, सूक्ष्म पोषक तत्व	पूरक आहार एवं पोषण पुनर्वास हेतु उपयुक्त
बाजरा-रागी इडली	बाजरा, रागी, उड़द दाल	प्रोटीन, कैल्शियम, फाइबर	सुपाच्य एवं पौष्टिक नाश्ता
सत्तू-दही पेय	सत्तू, दही	प्रोटीन, कैल्शियम, प्रोबायोटिक्स	गर्मियों में पौष्टिक एवं ऊर्जादायक पेय
मिश्रित दाल एवं सब्जी सूप	विभिन्न दालें एवं सब्जियां	प्रोटीन, विटामिन, खनिज	रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं स्वास्थ्य लाभ

खरीफ फसलों की जिलेवार एवं फसलवार बुवाई

जिला	बोनी 2026	गत वर्ष की बोनी	सामान्य क्षेत्र	लक्ष्य 2026
जबलपुर	130.7	116.4	238.3	255.6
कटनी	66.8	87.9	193.5	236.4
बालाघाट	74.8	117.5	305.7	309.8
छिंदवाड़ा	401.7	408.9	475.5	420.0
पांढुर्णा	80.1	91.8	76.5	83.0
सिवनी	258.8	332.3	402.6	416.9
मंडला	152.6	142.4	233.8	238.8
डिंडोरी	108.8	103.6	192.7	238.5
नरसिंहपुर	103.6	173.5	225.9	256.5
जबलपुर सं.	1377.9	1574.4	2344.5	2455.5
सागर	586.3	484.0	525.9	530.3
दमोह	285.7	287.6	307.2	310.1
पन्ना	131.7	85.3	225.2	214.3
टीकमगढ़	194.1	105.0	217.7	230.8
निवाड़ी	68.1	38.7	70.9	75.0
छतरपुर	320.2	252.6	402.7	380.0
सागर सं.	1586.0	1253.2	1749.6	1740.6
रीवा	112.5	177.4	317.0	253.0
मऊगंज	52.4	98.8	87.9	111.8
सीधी	50.4	66.4	150.5	159.4
सिंगरौली	39.1	56.6	148.0	157.3
सतना	65.9	85.2	304.3	232.2
मैहर	36.2	45.6	92.7	107.7
रीवा सं.	356.44	529.9	1100.4	1021.3
शहडोल	66.2	119.5	201.7	219.3
उमरिया	44.7	66.4	109.9	116.9
अनूपपुर	60.1	109.4	158.3	190.8
शहडोल सं.	170.9	295.3	469.9	527.0
इंदौर	235.6	232.1	240.6	248.4
धार	463.9	485.9	490.2	506.4
झाबुआ	174.0	178.4	171.6	184.4
अलीराजपुर	126.7	171.1	162.3	183.0
खरगोन	389.8	349.0	360.3	392.4

जिला	बोनी 2026	गत वर्ष की बोनी	सामान्य क्षेत्र	लक्ष्य 2026
बड़वानी	207.3	226.5	215.0	234.2
खंडवा	288.7	304.2	303.7	310.5
बुरहानपुर	80.4	92.4	60.6	66.5
इंदौर सं.	1966.4	2039.6	2004.3	2125.7
उज्जैन	515.0	508.7	508.10	515.9
मंदसौर	283.2	330.6	338.00	319.5
नीमच	175.7	168.4	164.20	175.7
रतलाम	336.8	323.7	334.00	337.5
देवास	405.2	404.7	410.10	410.4
शाजापुर	287.1	287.8	284.70	288.4
आगर	187.6	178.8	177.90	189.1
उज्जैन सं.	2190.7	2202.7	2217.0	2236.5
मुरैना	151.4	103.0	227.9	238.4
श्योपुरकला	218.2	83.5	162.5	168.7
भिंड	15.8	16.2	115.8	162.5
मुरैना सं.	385.4	202.7	506.2	569.6
ग्वालियर	33.4	69.7	162.2	194.5
शिवपुरी	282.2	239.6	428.8	420.5
गुना	310.0	188.0	331.3	336.3
अशोकनगर	248.4	249.5	302.5	293.5
दतिया	42.0	86.4	183.4	190.9
ग्वालियर सं.	915.9	833.2	1408.2	1435.7
भोपाल	129.2	141.2	139.2	151.7
सीहोर	392.9	342.5	395.6	408.4
रायसेन	243.8	290.4	362.7	393.6
विदिशा	503.9	516.1	509.4	526.6
राजगढ़	524.6	472.0	470.9	483.8
भोपाल सं.	1794.5	1762.2	1877.8	1964.1
नर्मदापुरम	214.8	315.2	296.4	319.5
हरदा	185.9	173.9	187.4	193.0
बैतूल	431.4	437.4	436.1	456.1
नर्मदासं.	832.1	926.5	919.9	968.58
मप्र योग	11576.3	11619.6	14597.8	15044.59

कृषक प्रशिक्षण एवं बीज वितरण का आयोजन

शहडोल। कृषि विज्ञान केंद्र शहडोल एवं किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग शहडोल के संयुक्त तत्वाधान में ग्राम नरगी ब्लॉक सोहागपुर में कृषक प्रशिक्षण एवं अरहर बीज वितरण का आयोजन किया गया। केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. ब्रजकिशोर प्रजापति ने जिले में इस वर्ष अल नीनो के प्रभाव के कारण मानसून की अनिश्चितता और सामान्य से कम वर्षा की संभावना को देखते हुए किसानों को वैकल्पिक कृषि रणनीतियां अपनाने की सलाह दी है। किसानों को उपलब्ध वर्षा एवं जल संसाधनों के अनुरूप कम अवधि वाली धान की किस्मों का चयन करने तथा जल संरक्षण तकनीकों को अपनाने का आग्रह किया है। सूखे के जोखिम को कम करने के लिए खेतों में सोयाबीन+अरहर,

मक्का+अरहर, ज्वार+अरहर, अरहर+मूंग/उड़द, अरहर+कोदो की अंतरवर्तीय फसल प्रणाली अपनायें, जिससे किसानों को फायदा होता है। अरहर भारत की एक महत्वपूर्ण दलहनी फसल हैं। डॉ. प्रजापति ने बताया कि मृदाजनित रोग जैसे उकठा जो अरहर बीज के अंकुरण से लेकर वृद्धि तक पौधे को प्रभावित करते हैं। निदान के लिए कृषकों द्वारा रासायनिक दवाओं का इस्तेमाल आर्थिक दृष्टि से लाभप्रद नहीं होता है। सामान्यत: फफूंद पर रासायनिक दवाओं का प्रभाव 10 से 20 दिनों तक रहता है। यदि फिर इनका प्रकोप होता है तो इन रोगों का प्रबंधन जटिल हो जाता है। लगातार रसायनों के छिड़काव और रासायनिक बीज शोधन से मिट्टी में रहने वाले लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। कृषि विस्तार अधिकारी, सोहागपुर रागनी मंडलोई ने किसानों को जानकारी दी कि भारत में उगाए जाने वाले श्रीअन्न के अंतर्गत मुख्यत: ज्वार, बाजरा, सांवा, कोदो, कुटकी तथा रागी जैसी फसलें शामिल हैं।

ई-विकास पोर्टल में सुधार की मांग

(प्रखर जैन)

सागर। मध्यप्रदेश सरकार ने किसानों के हित को देखते हुए एवं खाद विक्रय में पारदर्शिता और जटिलता को कम करने के लिए ई-टोकन की व्यवस्था लागू की है जो सराहनीय है।

खरीफ सीजन 2026 में किसानों को और खाद विक्रेताओं को निम्न प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा है जिसमें सुधार की काफी आवश्यकता है।

1. तकनीकी दिक्कतें जैसे ई-विकास पोर्टल का सर्वर डाउन रहना किसान द्वारा लाये हुए ई- टोकन स्कैन ना होना किसान द्वारा प्रिंट आउट ना लाना ओटीपी ना आना एवं बुक टोकन में लिखी हुई जानकारी हिंदी में ना होना एवं अनेकों तकनीकी उलझने।
2. जागरूकता और प्रशिक्षण में कमी - ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों की कम जागरूकता एवं ऑनलाइन सेंटरों की कमी और प्रशिक्षण का ना होना भी एक बड़ी समस्या है जिससे किसानों को टोकन बुकिंग में अनेकों जटिलताओं का सामना करना पड़ा है।
3. फुटकर खाद विक्रेताओं की अनेकों उलझनें जैसे अलग-अलग उपकरणों को मैनेज करना ई -टोकन मोबाइल फोन से

स्कैन करना और इसके उपरांत पीओएस मशीन से खाद विक्रय करना, भीड़ भाड़ की स्थिति मे टोकन स्कैन करने में भूल होना,एवं अलग-अलग उपकरणों को मैनेज करके ई-विकास पोर्टल में स्टॉक सही रखना एवं कार्यप्रणाली का अत्यधिक दबाव होना।

4. खाद विक्रेताओं का ई -विकास पोर्टल पर स्टॉक गलत अपडेट होने जैसे कई प्रकरण भी सामने आये हैं जिससे ई-विकास पोर्टल पर स्टॉक कम अपडेट होना एवम् ज्यादा अपडेट होने कि शिकायतें भी सामने आयी है जिससे किसान एवं खाद विक्रेता दोनों के लिए समस्या बनी रहती है।

अत:इस कार्यप्रणाली में अनेकों तकनीकी उलझने हैं जिसमें किसान और फुटकर खाद विक्रेता दोनों में ही गहरा असंतोष बना हुआ है जिसमें सुधार की अभी काफी आवश्यकता है।

(पृष्ठ 6 का शेष)

सोयाबीन की ...

- गंभीर प्रकोप में पूरा पौधा बौना रह जाता है और फली कम बनती है।

नियंत्रण

- थायोमेथोक्जाम 30% FS से बीजोपचार — 3 मिली प्रति किलोग्राम बीज
- डाइमिथोएट 30% EC — 1.7 मिली प्रति लीटर पानी

3. सफेद मक्खी : पहले चर्चा की गई यह कीट सिर्फ पीला मोजैक फैलाने के लिए ही नहीं, बल्कि सीधे रस चूसकर भी पौधे को कमजोर करता है।

पहचान कैसे करें

- पत्तियों की निचली सतह पर छोटे, सफेद, त्रिकोणीय आकार के कीट समूह में चिपके मिलते हैं, पत्ती को हिलाने पर ये उड़ते हुए दिखाई देते हैं।
- रस चूसने से पत्तियाँ मुड़ने लगती हैं और मीठे चिपचिपे पदार्थ पर काली फफूंद (सूटी मोल्ड) जमने लगती है।

नियंत्रण

- थायोमेथोक्जाम 25% WG - 0.2 ग्राम प्रति लीटर पानी
- इमिडाक्लोप्रिड 17.8% SL - 0.3 मिली प्रति लीटर पानी
- फ्लोनिकामिड 50% WG - 0.3 ग्राम प्रति लीटर पानी

4. सेमीलूपर : यह पत्ती खाने वाला कीट है, जिसका लार्वा चलते समय अपने शरीर को 'लूप' जैसे आकार में मोड़ता है, इसीलिए इसका यह नाम पड़ा।

पहचान कैसे करें

- पत्तियों में अनियमित आकार के छेद और किनारों से खाया हुआ भाग दिखता है, गंभीर प्रकोप में केवल पत्ती की नसें (शिराएँ) ही बचती हैं।
- लार्वा हरे रंग का, धारीदार और लूप बनाकर चलने वाला होता है, आमतौर पर पत्ती की निचली सतह पर मिलता है।

नियंत्रण:

- क्लोरएंट्रानिलिप्रोल 18.5% SC — 0.3 मिली प्रति लीटर पानी
- इमामेक्टिन बेंजोएट 5% SG — 0.4 ग्राम प्रति लीटर पानी

5. तंबाकू की इल्ली : यह एक बहुभक्षी कीट है और सोयाबीन में इसका प्रकोप अक्सर सामूहिक रूप से, यानी झुंड में दिखता है, जिससे बहुत कम समय में भारी नुकसान हो जाता है।

पहचान कैसे करें

- शुरुआती अवस्था में छोटे लार्वा झुंड में पत्ती की निचली सतह को खुरचकर खाते हैं, जिससे पत्ती पर पारदर्शी 'खिड़की' जैसा पैटर्न बनता है।
- बड़ी अवस्था के लार्वा अकेले फैल जाते हैं और पूरी पत्ती को चीथड़ों में बदल देते हैं, कई बार रातों-रात पूरा खेत झुलसा हुआ दिखता है।
- लार्वा का रंग हरे से गहरे भूरे-काले तक बदलता रहता है, शरीर पर हल्की धारियाँ और किनारों पर काले त्रिकोणीय धब्बे होते हैं।

नियंत्रण

- स्पिनोसैड 45% SC — 0.3 मिली प्रति लीटर पानी
- इमामेक्टिन बेंजोएट 5% SG — 0.4 ग्राम प्रति लीटर पानी
- नोवालुरॉन 10% EC — 1.5 मिली प्रति लीटर पानी
- छिड़काव शाम के समय करना बेहतर रहता है, क्योंकि यह लार्वा रात में ज्यादा सक्रिय होता है।

6. चने की फली छेदक / ब्लू बीटल : फूल और फली बनने की अवस्था में यह कीट सीधे उपज को प्रभावित करता है, इसलिए आर्थिक दृष्टि से यह सबसे संवेदनशील समय होता है।

पहचान कैसे करें

- फूलों और नई फलियों में छेद करके लार्वा अंदर घुस जाता है, फली का ऊपरी हिस्सा खोखला और दाना अधूरा दिखता है।
- लार्वा हरे रंग का, शरीर पर हल्की सफेद धारियों वाला होता है।

नियंत्रण:

- क्लोरएंट्रानिलिप्रोल 18.5% SC - 0.3 मिली प्रति लीटर पानी
- इंडोक्साकार्ब 15.8% EC - 0.5 मिली प्रति लीटर पानी।

सोयाबीन में कीट-रोग प्रबंधन व मौसम के अनुरूप उपाय अपनाएं : डॉ. चौहान

धार। कृषि विज्ञान केंद्र, धार के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एस.एस. चौहान ने खरीफ सीजन 2026 के लिए तकनीकी सलाह जारी करते हुए किसानों से तीन सप्ताह की सोयाबीन फसल में कीट एवं रोग प्रबंधन के साथ मौसम के अनुरूप सुरक्षात्मक उपाय अपनाने की अपील की है। यह सलाह भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के राष्ट्रीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान, इंदौर के वैज्ञानिक दिशा-निर्देशों पर आधारित है। डॉ. चौहान ने बताया कि जिन किसानों की सोयाबीन की बुवाई अभी तक नहीं हो सकी है, वे अब सोयाबीन के स्थान पर मूंग, उड़द या मक्का जैसी कम अवधि की वैकल्पिक फसलों की बुवाई करें। यदि वर्षा कम हो तो स्प्रिंकलर, ड्रिप या अन्य उपलब्ध साधनों से आवश्यक सिंचाई करें तथा अधिक वर्षा होने पर खेत में जल निकासी की समुचित व्यवस्था रखें। नमी की कमी से सोयाबीन की पत्तियों में लौह तत्व की कमी के कारण पीलापन दिखाई दे सकता है। ऐसी स्थिति में 1% प्रतिशत फेरस सल्फेट एवं 0.2% बुझा चूना का घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करना लाभकारी रहेगा। तना मक्खी, सफेद मक्खी, कॉलर रॉट तथा राइजोक्टोनिया जड़ सड़न जैसे प्रारंभिक कीट एवं रोगों की नियमित निगरानी करने और अनुशंसित कीटनाशकों एवं फफूंदनाशकों का वैज्ञानिक तरीके से उपयोग करने की सलाह दी।

(पृष्ठ 5 का शेष)

फॉल आर्मीवर्म से मक्के...

ऐसे करें प्रबंधन

अ. मॉनिटरिंग

- फेरोमोन ट्रेप 10 प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करे ।

ब. कल्चरल विधि

1. ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करके शंखी अवस्था को नष्ट करे
2. समय पर बुआई करें। मानसून वर्षा के साथ ही बुआई करें, विलंब ना करे
3. अनुशंसित पौध अंतरण पर कतार मे बुआई करे
4. संतुलित उर्वरकों का अनुषंसित मात्रा में, विषेषकर नत्रजन की मात्रा का प्रयोग अधिक ना करें
5. अंतवर्ती फसल के रूप में दलहनी फसल मूंग, उड़द लगाए
6. जिन क्षेत्रों में खरीफ की मक्का ली जाती है उन क्षेत्रों में ग्रीष्म कालीन मक्का ना लें तथा अनुशंसित फसल चक्र अपनाऐ।
7. फसल के आसपास 3 से 4 कतार मे ट्रेप फसल जैसे- नेपियर घास या ब्रेंचारिया घास और ट्रेप फसल को 5 प्रतिषत पी.पी.एम. या अजेडिरेक्टीन 1500 पी.पी.एम. की दर से छिड़काव करें जिससे कीट के अण्डे फूटने मे बाधा निर्माण होती है ।
8. प्यूपा से वयस्क बनने को रोकने के लिए भूमि में नीम की खली 250 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर डालें।

स. यांत्रिक विधि

1. अंडे के गुच्छे एवं इल्लियों ढूंढ़ कर हाथ से इकट्ठा कर नष्ट करें।
2. प्रकाश प्रपंच (एक प्रति हैक्टेयर) लगाकर इसके मोथ (तितली) पर नजर रखें।
3. प्रारंभिक अवस्था में ग्रसित पौधे में लकड़ी का बुरादा, राख एवं बारीक रेत पौधे की पोंगली में डालें।

द. जैविक विधि

1. अंतवर्ती फसल के रूप में दलहनी फसल मूंग, उड़द लगाए साथ ही सजावटी फूलों के पौधे लगाये जिससे मित्र कीट की संख्या में बढ़ोतरी की जा सकती है ।
2. जैविक कीटनाशक के रूप में बी टी 1 किग्रा प्रति हेक्टर अथवा बिवेरिया बेसियाना 1.5 ली प्रति हेक्टर का छिड़काव सुबह अथवा शाम के समय करें।

इ. रासायनिक विधि: लगभग 5 प्रतिशत प्रकोप होने पर रासायनिक कीटनाशक के रूप में फ्लूबेंन्डामाइट 20 डब्ल्यू डी जी 250 ग्राम प्रति हेक्टर या स्पाइनोसेड 45 एस.सी. 200-250 ग्राम प्रति हेक्टर या इथीफेनप्रॉक्स 10 ईसी 1 लीटर प्रति हेक्टर या एमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस.जी. का 200 ग्राम या क्लोरएन्ट्रानिलीप्रोल 18.5 एस.सी.150 मिली. प्रति हेक्टर में कीट प्रकोप की स्थिति अनुसार 15-20 दिन के अंतराल पर 2 से 3 बार छिड़काव करें अथवा थायोडिकार्ब 7 किग्रा प्रति हेक्टर की दर से उपयोग करें। प्रथम छिड़काव बुआई के बाद 15 दिन की अवधि में अवश्य करें।

- **नोट :** 1.दानेदार कीटनाशकों का उपयोग पौधे की पोंगली में करे । 2. फसल पर छिड़काव सुबह अथवा शाम के समय करें। 3. फसल में मांझर (टॅसलिंग एवं पोस्ट टॅसलिंग) अवस्था में छिड़काव न करे ।

नसरुल्लागंज में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

श्री राहुल कुमार सागर
मे. न्यू राहुल एग्रो एजेंसी
ग्राम-भैंरुदा (नसरुल्लागंज)
जिला-सीहोर (म.प्र.) मो. 9171959521

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

- ★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
- ★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
- ★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
- ★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक
एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स,
रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास
होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875, 9300754675, 9826686078

दीवटिया में

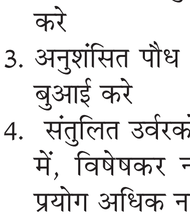

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

श्री मुकेश नागर
नागर कृषि सेवा केन्द्र
दीवटिया, जिला-रायसेन
(म.प्र.) मो. 9589277415

मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स
(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

•औषधीय •वन •सब्जी •फूल •बीज •स्प्रे पंप एवं पार्ट्स •कीटनाशक •जैविक खाद • गार्डन टूल •जैविक उत्पाद •ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।

वितरक - •निर्मल सीड्स, जलगांव •कलश सीड्स, जालाना •अंकुर सीड्स, नागपुर • वेस्टर्न सीड्स, गुजरात •दिनाकर सीड्स, गुजरात •सटिंड सीड्स, दिल्ली • फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना •स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई •जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर •स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर •अनु प्रोडक्ट्स लि. •श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

आईसीएआर-एनआईबीएसएम में किसान-वैज्ञानिक संवाद एवं कृषि यंत्र वितरण कार्यक्रम

रायपुर। आईसीएआर-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान रायपुर में फार्मर फर्स्ट कार्यक्रम (एफएफपी) के अंतर्गत किसान-वैज्ञानिक संवाद सह कृषि यंत्र वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में रायपुर जिले के तिल्दा विकासखंड के पांच नव-चयनित गांवों—बरौंडा, अड़सेना, मोहदी, गनियारी और असौंदा—के किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य वैज्ञानिक कृषि, कृषि यंत्रीकरण और टिकाऊ खेती को बढ़ावा देना था।

आईसीएआर-एनआईबीएसएम में फार्मर फर्स्ट कार्यक्रम को फसल उत्पादन, उद्यानिकी, पशुधन, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, उद्यम विकास तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) से संबंधित छह विषयगत मॉड्यूल के माध्यम से क्रियान्वित किया जा रहा है। यह कार्यक्रम सहभागी दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसका उद्देश्य प्रौद्योगिकी एकीकरण, खेत स्तर पर सत्यापन, किसानों की प्रतिक्रिया के आधार पर तकनीकों में सुधार, संस्थागत भागीदारी और प्रभावी ज्ञान प्रसार के माध्यम से किसान-वैज्ञानिक सहभागिता को सुदृढ़ करना है। इससे कृषि उत्पादकता, लाभप्रदता और किसानों की आजीविका सुरक्षा को बेहतर बनाने का लक्ष्य रखा गया है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए निदेशक डॉ. पी. के. राय ने कृषि उत्पादकता, लाभप्रदता और स्थिरता बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक एवं स्थान-विशिष्ट कृषि तकनीकों को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने किसानों से कार्यक्रम के अंतर्गत वितरित कृषि यंत्रों का प्रभावी उपयोग करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि कृषि यंत्रीकरण से श्रम की कठिनाई कम होती है, कृषि कार्य समय पर पूरे होते हैं तथा खेती की दक्षता और फसल उत्पादकता में वृद्धि होती है।

किसान-वैज्ञानिक संवाद के दौरान आईसीएआर-एनआईबीएसएम के वैज्ञानिकों ने उन्नत फसल उत्पादन तकनीकों, वैज्ञानिक फसल प्रबंधन, एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन तथा कृषि यंत्रों के कुशल उपयोग पर व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान किया। किसानों ने अपने खेतों के अनुभव और उत्पादन संबंधी समस्याएं साझा कीं, जिनके समाधान के लिए वैज्ञानिकों ने विज्ञान-आधारित एवं स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप सुझाव दिए।

कार्यक्रम में छह महिला किसानों सहित कुल 65 किसानों ने भाग लिया और कृषि यंत्र प्राप्त किए। इस पहल से कृषि कार्यों को समय पर पूरा करने, कृषि आदानों के उपयोग की दक्षता बढ़ाने, उत्पादन लागत कम करने तथा नव-चयनित गांवों में उन्नत कृषि तकनीकों को तेजी से अपनाने में मदद मिलने की उम्मीद है।

कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. पी. मूवेनथन, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं परियोजना के प्रधान अन्वेषक द्वारा किया गया।

मुर्गी पालन प्रशिक्षण की परीक्षा संपन्न

उमरिया। मध्यप्रदेश शासन ग्रामीण आजीविका मिशन के सहयोग से महिलाओं को आत्मनिर्भर स्वावलंबी एवं स्वरोजगार स्थापित करने के लिए जिले के जनपद पंचायत करकेली के अंतर्गत ग्राम पंचायत मझौली खुर्द के ग्राम गांजर में गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाली स्व सहायता समूह की महिलाओं एवं पुरुषों को मुर्गी पालन का 12 दिवसीय प्रशिक्षण स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान के प्रबंधक डॉक्टर तरुण कुमार सिंह के मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण समन्वयक राज बहादुर जायसवाल के सहयोग से प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के पश्चात ओम प्रकाश चतुर्वेदी परीक्षा नियंत्रक एवं प्रमाणीकरण रुडसेटी ग्रामीण विकास मंत्रालय भारत सरकार मुख्यालय भोपाल के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में मुर्गी पालन की परीक्षा परीक्षक रामसुख दुबे कटनी एवं बैंक से संबंधित परीक्षा परीक्षक पवन कुमार पांडे शहडोल द्वारा परीक्षा ली गई। स्वरोजगार स्थापित करने के लिए मुर्गी पालन से लाभ मुर्गियों की नस्ल आवास एवं मुर्गियों तथा चूज़ों के रखरखाव तथा मुर्गियों में होने वाले जीवाणु जनित विषाणु जनित रोग एवं उनसे बचाव के लिए टीकाकरण परजीवी रोग एवं उनकी रोकथाम एवं शासन द्वारा मुर्गी पालन से संबंधित योजनाओं की जानकारी का लिखित एवं मौखिक मूल्यांकन परीक्षक रामसुख दुबे कटनी द्वारा किया गया तथा बैंकिंग से संबंधित मूल्यांकन पवन कुमार पांडे शहडोल द्वारा किया गया। परीक्षा के पश्चात प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए परीक्षा संपन्न कराने में आशीष पटेल जगत कपिल श्रीवास्तव एवं सोम साहू द्वारा सहयोग किया गया।

मध्यप्रदेश की जिलेवार वर्षा

01 जून से 19 जुलाई 2026 तक (वर्षा मिमी में)

जिला	वास्त.	सामान्य	कम/अधिक%
आगर-मालवा	310.4	274	13
आलीराजपुर	65.9	278.8	-76
अशोकनगर	252.3	281.1	-10
बड़वानी	201.3	226.8	-11
बैतूल	290.9	344	-15
भिंड	217.3	191.6	13
भोपाल	327.4	319.5	2
बुरहानपुर	313.5	255.9	22
दतिया	141.3	219.5	-36
देवास	458.9	287.4	60
धार	181	263.6	-31
गुना	273.7	302	-9
ग्वालियर	193.1	203.8	-5
हरदा	358.6	342.5	5
इंदौर	353.3	273.9	29
झाबुआ	164.4	280.3	-41
खंडवा	279.8	270	4
खरगोन	259.2	246.4	5
मन्दसौर	256.7	245.7	4
मुरैना	129.2	192	-33
नर्मदापुरम	219.8	413.1	-47
नीमच	258.3	229.2	13
रायसेन	248.2	359.7	-31
राजगढ़	286.6	276.2	4
रतलाम	230.9	258.2	-11
सीहोर	356	331.1	8
शाजापुर	254.5	274.8	-7
श्योपुर	180.4	211.6	-15
शिवपुरी	173.9	253.4	-31

जिला	वास्त.	सामान्य	कम/अधिक%
उज्जैन	296.4	280.8	6
विदिशा	257.7	342.3	-25
पश्चिमी म.प्र.	253.1	280.5	-10
अनूपपुर	303.6	364.2	-17
बालाघाट	371.7	444.7	-16
छतरपुर	259.6	278.1	-7
छिंदवाड़ा	296.2	358.7	-17
दमोह	333	357.7	-7
डिंडोरी	346.1	418.8	-17
जबलपुर	257.1	359.4	-28
कटनी	245.7	323	-24
मंडला	266.9	415.4	-36
नरसिंहपुर	214.6	344.5	-38
निवाड़ी	256	229.5	12
पन्ना	285.1	346.8	-18
रीवा	121	316.3	-62
सागर	253.4	372.5	-32
सतना	263.1	317.8	-17
सिवनी	339.5	388.3	-13
शहडोल	246.7	320	-23
सीधी	212.9	351.8	-39
सिंगरौली	192.1	358.7	-46
टीकमगढ़	239	301.5	-21
उमरिया	280.1	340.8	-18
मैहर	205	322.1	-36
मऊगंज	249.4	309.2	-19
पांढुर्णा	341.3	299.8	14
पूर्वी म.प्र.	272.3	352.4	-23
म.प्र. योग	261.7	311.8	-16

(स्रोत : मौसम विभाग)

सदस्यता फार्म

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन-0755-4233824

मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675

E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम...

संस्था का नाम...

पूरा पता...

ग्राम..........................पोस्ट..........................तहसील..........................

जिला..........................राज्य..........................पिन कोड

दूरभाष/कार्या. .... घर .... मोबा. : ....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

- वार्षिक : 700/-
- तृवार्षिक : 1900/-
- दसवर्षीय : 6100/-
- द्विवार्षिक : 1300/-
- पंचवर्षीय : 3100/-
- आजीवन : 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र "कृषक दूत" की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में).......................... (शब्दों में)..........................

बैंक का नाम.......................... ड्राफ्ट चेक क्रमांक..........................

दिनांक.......................... संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान.......................... प्रतिनिधि का नाम एवं हस्ताक्षर — हस्ताक्षर सदस्य एवं संस्था सील

दिनांक..........................

खेत से कारखाने और कारखाने से बाजार तक विकसित होगी कृषि अर्थव्यवस्थाः डॉ. यादव

मुख्यमंत्री ने किया राज्य स्तरीय बलराम कृषि महोत्सव का शुभारंभ

इंदौर। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इंदौर से राज्य स्तरीय बलराम कृषि महोत्सव का शुभारंभ करते हुए कहा कि मध्यप्रदेश में खेती को केवल उत्पादन तक सीमित नहीं रखा जाएगा, बल्कि 'खेत से कारखाने और कारखाने से बाजार' तक संपूर्ण कृषि अर्थव्यवस्था विकसित की जा रही है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2026 को किसान कल्याण वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है और इसके तहत कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन, मत्स्य, सहकारिता, एमएसएमई, ऊर्जा तथा राजस्व सहित 16 विभागों के समन्वय से किसानों की आय बढ़ाने का व्यापक अभियान चलाया जा रहा है।

डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश के सभी 55 जिलों में 13 नवंबर तक बलराम कृषि महोत्सव के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रम, तकनीकी प्रशिक्षण, कृषि प्रदर्शनियां और खेती-किसानी से जुड़ी गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। सरकार किसानों को दिन में कृषि बिजली उपलब्ध कराने, शून्य प्रतिशत ब्याज पर कृषि ऋण देने और उनकी उपज का उचित मूल्य सुनिश्चित करने के लिए लगातार कार्य कर रही है।

स्लीमनाबाद टनल विंध्य के पांच जिलों के लिए बनेगी अमृतधाराः डॉ. यादव

कटनी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि स्लीमनाबाद टनल परियोजना विंध्य क्षेत्र के किसानों के लिए नई उम्मीद लेकर आई है। इस महत्वाकांक्षी परियोजना के पूर्ण होने से कटनी, रीवा, सतना, मैहर और पन्ना जिलों में लगभग ढाई लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई सुविधाओं का विस्तार होगा, जिससे कृषि उत्पादन बढ़ेगा और किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने स्लीमनाबाद टनल का निरीक्षण करने के बाद आयोजित प्रेस वार्ता में यह जानकारी दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि 1600 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से निर्मित लगभग 12

किलोमीटर लंबी यह टनल नर्मदा के जल को गंगा बेसिन तक पहुंचाने वाली प्रदेश की महत्वपूर्ण सिंचाई परियोजना है। कई स्थानों पर इसकी गहराई 120 फीट तक है। आधुनिक तकनीक से निर्मित यह टनल भविष्य में इंजीनियरिंग के क्षेत्र में केस स्टडी के रूप में भी पहचान बनाएगी। उन्होंने कहा कि परियोजना के माध्यम से सतना, मैहर, कटनी, रीवा और पन्ना के विस्तृत कमांड क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी। आगामी तीन माह में रबी सीजन के लिए लगभग एक लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई हेतु पानी उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया है।

पोषण सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए पोषण वाटिका का प्रदर्शन

हरदा। ग्रामीण परिवारों में पोषण सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने तथा संतुलित आहार के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से कृषि विज्ञान केंद्र, हरदा द्वारा ग्राम चौकी में पोषण वाटिका प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में ग्रामीण महिलाओं को घर के आसपास उपलब्ध भूमि का उपयोग कर वर्षभर पौष्टिक एवं रसायन-मुक्त सब्जियों का उत्पादन करने के लिए प्रेरित किया गया।

कृषि विज्ञान केंद्र की वैज्ञानिक डॉ. जागृति बोरकर ने महिलाओं को हरी एवं मौसमी सब्जियों के नियमित सेवन से होने वाले स्वास्थ्य लाभों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि पोषण वाटिका के माध्यम से परिवारों को ताजी, पौष्टिक और सुरक्षित सब्जियां आसानी से उपलब्ध होती हैं, जिससे संतुलित आहार सुनिश्चित होने के साथ कुपोषण की रोकथाम में भी मदद मिलती है। उन्होंने सहजन (मुनगा) के पोषण एवं स्वास्थ्य लाभों पर भी विस्तार से जानकारी दी। डॉ. बोरकर ने बताया कि घरेलू आवश्यकता पूरी होने के बाद अतिरिक्त सब्जियों की बिक्री कर महिलाएं अतिरिक्त आय भी अर्जित कर सकती हैं। इस प्रकार पोषण वाटिका न केवल परिवार की पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करती है, बल्कि महिला सशक्तिकरण और आजीविका संवर्धन का भी प्रभावी माध्यम बन सकती है।

कार्यक्रम के दौरान चयनित ग्रामीण महिलाओं को उन्नत किस्म के सब्जी बीज एवं सहजन के पौधे वितरित किए गए। कार्यक्रम के आयोजन में आगा खान संस्था, खिरकिया के एम.एम. पाली ने लाभार्थी महिलाओं के चयन एवं पोषण वाटिका के ले-आउट तैयार करने में सहयोग प्रदान किया। कार्यक्रम में उपस्थित महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपने घरों में पोषण वाटिका स्थापित कर परिवार के पोषण स्तर में सुधार लाने का संकल्प लिया।

बाणसागर में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

श्री अजय सोंधिया
मे. सोंधिया बीज भंडार
बाणसागर तिराहा, देवलोन
जिला-शहडोल (मप्र)
मो. 9424335104

किसान भाई 31 जुलाई तक फसल बीमा कराएं

किसानों को 2 प्रतिशत देना होगा प्रीमियम

भोपाल (विशेष प्रतिनिधि)। भारत सरकार एवं मध्यप्रदेश सरकार द्वारा क्रियान्वित प्रधानमंत्री फसल बीमा की अंतिम तारीख 31 जुलाई 2026 निर्धारित की गई है। खरीफ 2026 के लिए सभी प्रमुख फसलों जैसे सोयाबीन, धान, मक्का, कपास, मूंग, उड़द, ज्वार इत्यादि का फसल बीमा किया जा रहा है। प्रधानमंत्री फसल बीमा कर रही बीमा कंपनियों को जिलेवार एवं फसलवार जिम्मेदारी सरकार द्वारा सौंप दी गई हैं। किसान भाई अपने निकटतम सेवा सहकारी समिति, सरकारी बैंकों एवं व्यावसायिक बैंकों की शाखाओं में जाकर आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत करके फसल बीमा करा सकते है। कामन सर्विस सेंटर, बीमा कंपनियां एवं एमपी ऑनलाइन के कियोस्क पर भी फसल बीमा कराया जा सकता है। बीमा पंजीकरण हेतु आधार कार्ड, बैंक पासबुक एवं भूमि संबंधित दस्तावेज जरूरी है।

आर.एन.आई.नं. एमपी एचआईएन/2000/06836 डाक पंजीयन क्र. एम.पी./ भोपाल/625/2024-26 कृषक दूत- एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.) Email:- krishak_doot@yahoo.co.in डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार

5 crore+ HAPPY CUSTOMERS

5 YEAR WARRANTY

इंस्टेंट डिस्काउंट ₹10 000* तक

HDFC BANK | SBI card

क्रेडिट कार्ड

pine labs

TOLL FREE 1800 266 0018

अधिकृत डीलर: भोपाल: वर्धमान हीरो (प्रभात पेट्रोल पंप, रायसेन रोड 9289922488, जे.के. रोड 8959905381), साँई हीरो (डी.आई.जी. बंगला, बैरसिया रोड) 9289922885, यूनाइटेड हीरो (कोहेफिज़ा) 9289923150, इंदौर: सुहासिनी हीरो (अन्नपूर्णा रोड) 9289922779, वी.एस. हीरो (एयरपोर्ट रोड) 9289923081, टोनी ऑटोमोबाइल्स (मयूरकुंआ) 9289922321, टक्साली ऑटोमोटिव (एल.आई.जी. चौराहा के पास) 9971444414, मेहता ऑटोमोबाइल्स (देवास नाका), 9827041577, ग्वालियर: तनुष्का हीरो (सिटी सेन्टर 9289922371, मुरार 4099928, कम्पू 4072000), उदय अंगद हीरो (फूलबाग 9289922483, सखियाँ विलास 2438034), जबलपुर: सुपर हीरो (आज़ाद सिविल लाइन्स) 9289922350, सुदर्शन हीरो (नेपियर टाउन 9289922308, गढ़ा महल 9111100352, दमोह नाका 9111100344), उज्जैन: शिप्रा हीरो (फ्रीगंज, देवास रोड) 9289922354, लोहिया हीरो (निलगंगा मंडी के सामने) 9289922718, बैतूल: खण्डेलवाल हीरो, 9289922824, खंडवा: मंत्री हीरो (गन्धेश्वर मंत्री पेट्रोल पंप, इंदौर नाका) 9522257587, जावरा: आनंद हीरो 9289922?0?, गुना: गगन हीरो 9289922358, अशोक नगर: आदर्श हीरो 9821743269, होशंगाबाद: पुष्पांजलि हीरो 9289922380, हरदा: राहुल हीरो 9289922491, विदिशा: पाल हीरो 9289922378, दमोह: इण्डिया ऑटो हीरो 9289922073, सागर: सेन्ट्रल हीरो (भगवानगंज, मकरोनिया) 9289922370, टीकमगढ़: आनंद हीरो 9289922312, छतरपुर: आनंद हीरो (झांसी रोड 9289922374, पन्ना रोड 7389238472), बड़वानी: शर्मा हीरो 9289922742, बुरहानपुर: श्रीजी हीरो 9289922872, देवास: सुखना हीरो (ए.बी. रोड 9289922488, गंगानगर 9993599392), धार: साक्षी हीरो 9289922818, हाट पिपलिया: श्रीराम हीरो 9289923154, झाबुआ: नागोड़ा हीरो 9289922879, कुक्षी: अन्नपूर्णा हीरो 9289922749, झाबुआ: ठक्कर हीरो 9289923018, खरगोन: निमाड़ हीरो 9289922378, महू: जैन हीरो 9289923079, पीथमपुर: रघुवंशी हीरो 9289923047, सनावद: राजेश हीरो 9289922774, बालाघाट: ज्ञानस्वाल हीरो 9289922572, छिन्दवाड़ा: ठक्कर हीरो 9289922805, मण्डला: शुभम हीरो 9289922800, नरसिंहपुर: रचना हीरो 9289922377, रीवा: अंबिका हीरो (डी.पी. नगर 9752283333, इलाहाबाद रोड 9?????), सतना: उदय हीरो 9289922366, अंबिका हीरो 9289922308, शहडोल: किशोर हीरो 9289923108, गुप्ता हीरो 9289922370, कटनी: हर्ष हीरो 9289923166, बैढ़न: कुन्दन हीरो 9289922743, बजरंग मोटर्स 7354068000, सीधी: राजेन्द्र मोटर्स 9289923113, सिवनी: सुदर्शन हीरो 9827740430, मोरेना: श्रीजी ऑटोमोबाईल्स, 9821740842, भिण्ड: शिवम हीरो 9289922787, दतिया: शिव हीरो 9289923172, मुरैना: गगन हीरो 9289922878, श्योपुर: आशीष हीरो 9289922832, शिवपुरी: रघुवंशी हीरो 9289922571, राजगढ़: क्लासिक हीरो 9289922778, शाजापुर: बाबा हीरो 9289922833, रतलाम: एक्सीलेन्ट हीरो (महू रोड 9289922375, सैलाना रोड 07412-408800) नीमच: उत्तम हीरो 9289922367, मन्दसौर: राजदर्शन हीरो 9289922380, जावरा: रिलायबल हीरो 9289923045.

रायपुर: छत्तीसगढ़ हीरो 9289922301, आरमन हीरो 9289922864, राजधानी हीरो 9289922414, राजनांदगांव: जय हीरो 9289922307, पत्थलगांव: सत्यम हीरो 9289922020, कांकेर: राहुल हीरो 9289922834, महासमुंद: वत्स हीरो 9289922023, बलौदाबाजार: अग्रवाल हीरो 9289922059, आरंग: श्री राम हीरो 9289922388, डोंगरगढ़: श्री साईं हीरो 9289922835, कवर्धा: सहस्त्राब्दी हीरो 9289922058, जगदलपुर: विजयपाल हीरो 9289923064, धमतरी: जय विनय हीरो 9289922090, दल्लीराजहरा: लक्ष्मी हीरो 9289922983, भाटापारा: कुशल हीरो 9289923052, भिलाई: इंडियन हीरो 9289922355, चौहान मोटर्स 9289923817, दुर्ग: उत्सव हीरो 9289922314, उत्सव हीरो 7000595300, बिलासपुर: सत्या हीरो 9289922484, नीलकंठ हीरो 9289922706, अंबिकापुर: आनंद हीरो 9289922309, अनुपमा हीरो 9289922310, कोरबा: शांति हीरो 9289922013, भटीगढ़ हीरो 9289923087, रायगढ़: गोयल हीरो 9289922373, आदित्य हीरो 9289923081, जांजगीर: आनंद हीरो 9289922772, बैकुंठपुर: आर.के. हीरो 9289922812, जशपुर: आकांक्षा हीरो 9289922909.